HANDWRITTEN NOTES

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO



LATEST EDITION

राजस्थान P.T.I. (2nd GRADE)

(R.P.S.C.)

(वरिष्ठ शारीरिक शिक्षा अध्यापक)

भाग -1

राजस्थान भूगोल + इतिहास + संस्कृति + राजव्यवस्था

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान P.T.I.

(Second Grade)

(वरिष्ठ शारीरिक शिक्षा अध्यापक)

2022

पेपर –I

भाग – I

राजस्थान का भूगोल + इतिहास + संस्कृति + राजव्यवस्था

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"राजस्थान P.T.I. (वरिष्ठ शारीरिक शिक्षा अध्यापक)" (2nd Grade)*** *को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* ***राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"राजस्थान P.T.I. (वरिष्ठ शारीरिक शिक्षा अध्यापक)" (2nd Grade)*** *भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

नोट्स खरीदने के लिए ⬇

Whatsapp करें - https://wa.link/nc3moh

या

Online order करें - https://bit.ly/pti-2nd-notes

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम (2022)

राजस्थान का भूगोल

1. स्थिति एवं विस्तार	1
2. भौतिक विशेषताएं	13
3. जलवायु	24
4. जल निकासी (अपवाह तंत्र) नदियाँ एवं झीलें	28
5. राजस्थान की वनस्पति	46
6. कृषि	53
7. पशुधन / पशुपालन	60
8. राजस्थान में डेयरी विकास	67
9. जनसंख्या वितरण, विकास, साक्षरता, और लिंगानुपात	69
10. जनजातियाँ	79
11. राजस्थान के प्रमुख उद्योग	84
12. पर्यटन केन्द्र (स्थल)	104

राजस्थान का इतिहास

1. राजस्थान की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता 118

- कालीबंगा की सभ्यता
- आहड़ सभ्यता
- गणेश्वर (सीकर)
- बैराठ (जयपुर)

2. गुर्जर प्रतिहार 130

3. अजमेर के चौहान 134

4. दिल्ली सल्तनत से संबंध - मेवाड़, रणथम्भौर और जालौर 137

- राणा सांगा
- महाराणा प्रताप सिंह
- राजसिंह
- चन्द्रसेन
- मानसिंह
- महाराजा रायसिंह

5. राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास 191

- 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान

6. राजस्थान में राजनीतिक जागरण 201

7. प्रजामंडल आंदोलन 208

8. किसान और आदिवासी आंदोलन 224

9. राजस्थान का एकीकरण 236

10. राजस्थान इतिहास की प्रसिद्ध महिला व्यक्तित्व 241

राजस्थान की कला व संस्कृति

1. लोक देवता और लोक देवियाँ 244

2. राजस्थान के संत 254

3. वास्तुकला – मंदिर किले और महल 262

4. पेंटिंग्स (चित्रकला) 277

5. मेले और त्यौहार 285

6. सामाजिक रीत रिवाज, प्रथाएँ 297

7. वस्त्र एवं आभूषण 309

8. लोक संगीत और लोक नृत्य 314

9. भाषा और साहित्य 324

राजस्थान की राजव्यवस्था

1. राज्यपाल	339
2. मुख्यमंत्री और मंत्रिमंडल की भूमिका और कार्य	345
3. राज्य सचिवालय और प्रमुख सचिव	352
4. राजस्थान लोक सेवा आयोग का संगठन और भूमिका	359
5. राज्य मानवाधिकार आयोग संगठन और भूमिका	361
6. राजस्थान में पंचायती राज	363
7. राजस्थान में राज्य विधानसभा	370

राजस्थान का भूगोल

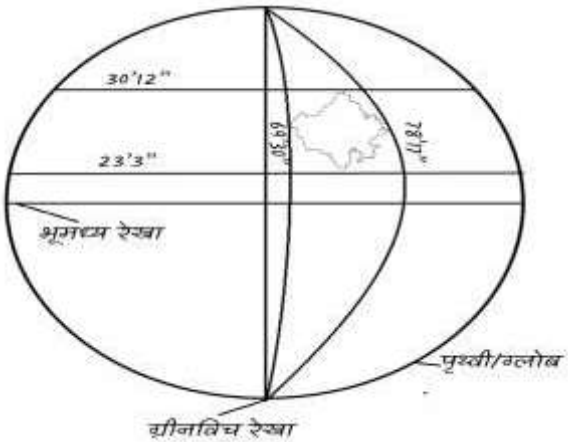
अध्याय – I

स्थिति एवं विस्तार

राजस्थान का विस्तार -

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3" से 30° 12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर है।





नोट :- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार **7° 9"(30°12" 23°3")** है तथा कुल देशांतरीय विस्तार **8°47" (78°17" 69°30")** है।

1° = 4 मिनट

1° =111.4 किलोमीटर होता है।

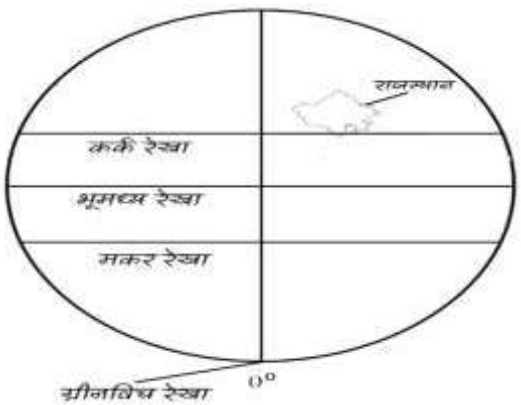
अक्षांश रेखाएँ :- वह रेखाएँ जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अथार्त भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है। (देखें मानचित्र-I)

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90 डिग्री उत्तरी गोलार्द्ध में और 90 डिग्री दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180 डिग्री है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181 होती है।

देशांतर रेखाएँ :- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360 डिग्री रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है। ग्रीनविच, जहाँ ब्रिटिश राजकीय वैधशाला स्थित है, से गुजरने वाली यामोत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस यामोत्तर को प्रमुख यामोत्तर कहते हैं। इसका मान देशांतर है तथा यहां से हम 180 डिग्री पूर्व या 180° डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

- राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।
- 1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था। लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान बन गया।
- 2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 6,85,48,437 थी, जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है।

- **कर्क रेखा राजस्थान में स्थित :-**



कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-
1.गुजरात 2.राजस्थान 3.मध्यप्रदेश 4.छत्तीसगढ़ 5.झारखंड 6. पश्चिम बंगाल
7.त्रिपुरा 8.मिजोरम

राजस्थान में कर्क रेखा बाँसवाड़ा जिलें के मध्य से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है। इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिलें को भी स्पर्श करती है, अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है।

राजस्थान में कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोंमीटर है। राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है।

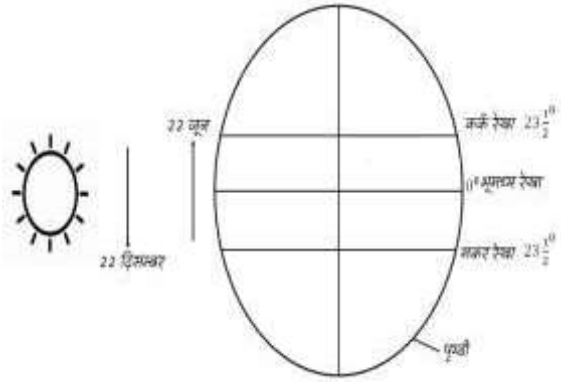
राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बाँसवाड़ा है।

भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है, अतः वहां पर तापमान अधिक होता है। जैसे-जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है।

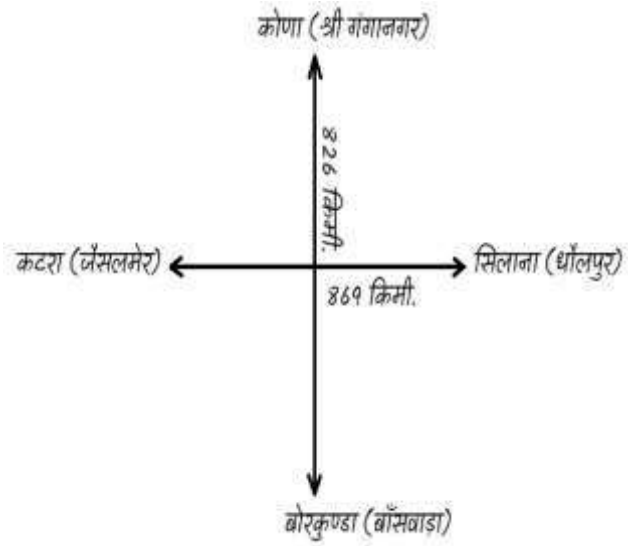
राजस्थान में बाँसवाड़ा जिलें में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

कारण :- बाँसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है, तथा श्रीगंगानगर सबसे उत्तर में स्थित है।

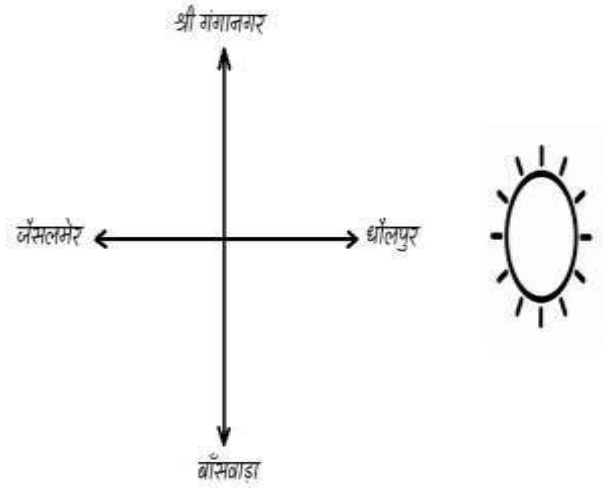
राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बाँसवाड़ा होना चाहिए, एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए, लेकिन वर्तमान में राज्य का सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरु है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है इसका कारण यहां पाई जाने वाली रेत व जिप्सम है।



(निम्न मानचित्र को ध्यान से समझिए) -



पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त



राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

<u>विस्तार</u> :-राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोंमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिलें के कोणा गांव से दक्षिण में बाँसवाड़ा जिलें की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गांव तक है।

इसी प्रकार पूरव से पश्चिम तक की चौंड़ाई 869 किलोंमीटर है तथा विस्तार पूरव में धौलपुर जिलें के सिलाना गांव से पश्चिम में जैसलमेर जिलें के कटरा गांव तक है।

आकृति :-

विषम कोणीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है।

राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोंमीटर (1070 अंतर्राष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

राजस्थान की सीमा 5 राज्यों के साथ लगती है। 1. पंजाब, 2. हरियाणा, 3. उत्तरप्रदेश, 4. मध्यप्रदेश, 5. गुजरात।

रेडक्लिफ रेखा :-

रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सिरिल एम रेडक्लिफ को माना जाता है। इसकी स्थापना 14/15 अगस्त 1947 को की गई। इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3,310 किलोंमीटर है।

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के चार राज्य स्थितहैं।

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी.)
2. पंजाब (547 कि.मी.)
3. राजस्थान (1070 कि.मी.)
4. गुजरात (512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सर्वाधिक सीमा- राजस्थान (1070 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात(512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय :- श्रीनगर

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दूर राजधानी मुख्यालय :- जयपुर

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य :- राजस्थान

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य :- पंजाब

रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा 1070 कि.मी. है। जो राजस्थान के चार जिलों से लगती है।

1. श्रीगंगानगर - (210 कि.मी.)
2. बीकानेर - (168 कि.मी.)
3. जैसलमेर - (464 कि.मी.)
4. बाड़मेर - (228 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में गंगानगर के हिंदुमल कोट से लेकर दक्षिण में बाड़मेर के शाहगढ़ बाखासर गाँव तक विस्तृत है।

रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिलें पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयार खान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खेरपुर, संघर, उमरकोट व थारपारकर राजस्थान से सीमा बनाते हैं।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा-बहावलपुर

राजस्थानके साथ न्यूनतम सीमा- खैरपुर

पाकिस्तान के दो राज्य (प्रांत) राजस्थान से छुते हैं।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

[रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।]

राजस्थान से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) व न्यूनतम सीमा बीकानेर (168 कि.मी.) की रेडक्लिफ रेखा से लगती है।

रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय :- श्रीगंगानगर

रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय :- बीकानेर

रेडक्लिफ पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला :- जैसलमेर

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्रफल में छोटा जिला :- श्रीगंगानगर

राजस्थान के केवल अन्तराष्ट्रीय सीमा वाले जिलें - 2 (बीकानेर, जैसलमेर)

राजस्थान के परिधिय जिलें :- 25

राजस्थान के अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिलें :- 23

राजस्थान के केवल अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिलें :- 2।

राजस्थान के 2 ऐसे जिलें हैं जिनकी अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा है :- गंगानगर (पाकिस्तान + पंजाब), बाड़मेर (पाकिस्तान + गुजरात)

राजस्थान के 4 जिलें ऐसे है, जिनकी सीमा दो - दो राज्यों से लगती है-

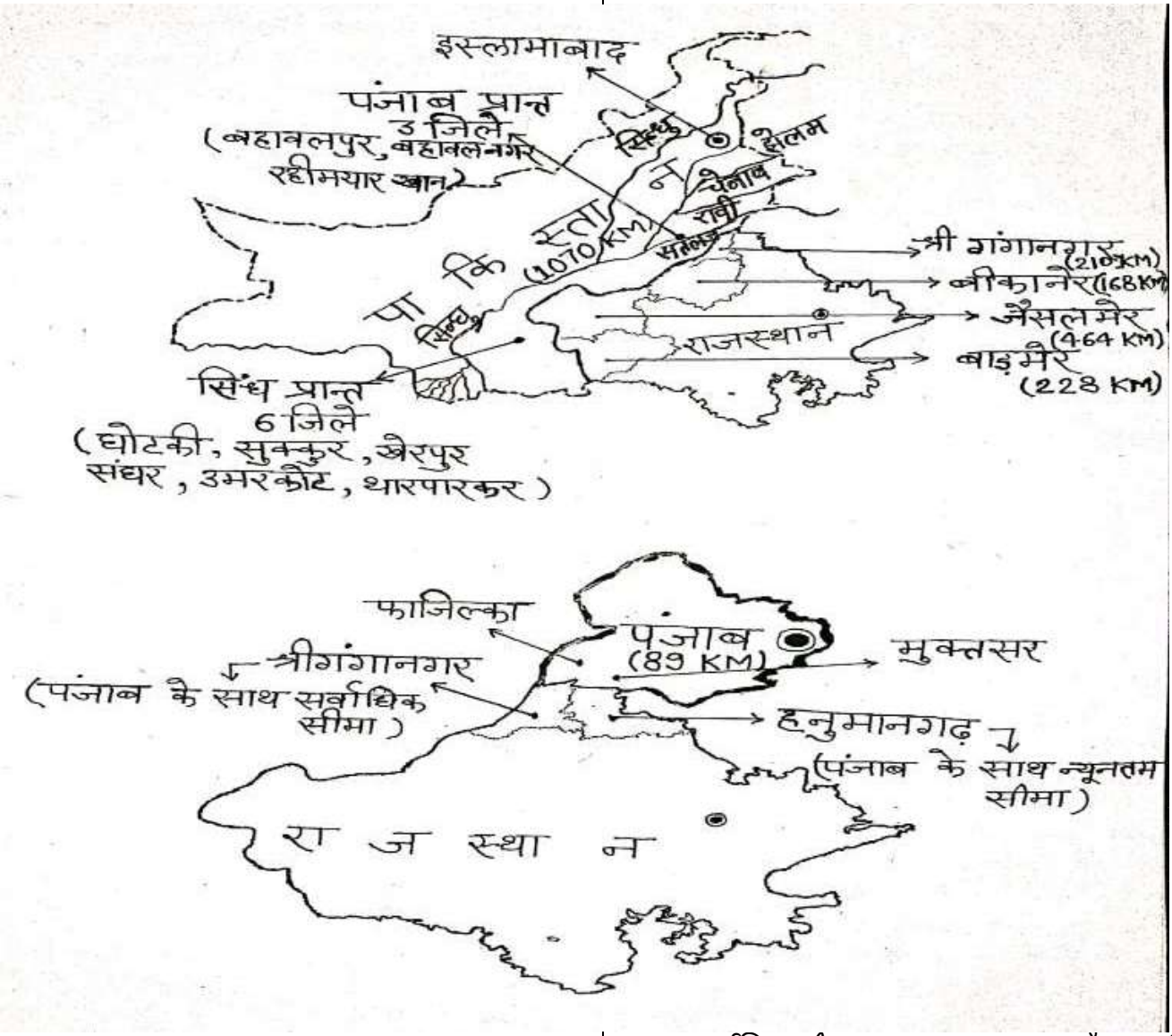
- हनुमानगढ़ :- पंजाब + हरियाणा
- भरतपुर :- हरियाणा + उतरप्रदेश
- धौलपुर :- उतरप्रदेश + मध्यप्रदेश
- बाँसवाड़ा :- मध्यप्रेदश + गुजरात

राजस्थान की अन्य राज्यों से सीमाएँ :-

पंजाब (89 कि.मी.)

राजस्थान के दो जिलों की सीमा पंजाब से लगती है तथा पंजाब के दो जिलें फाजिल्का व मुक्तसर की सीमा राजस्थान से लगती है। पंजाब के साथ सर्वाधिक सीमा श्रीगंगानगर व न्यूनतम सीमा हनुमानगढ़ की लगती है। पंजाब सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा दूर जिला

मुख्यालय हनुमानगढ़ हैं। पंजाब सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला श्रीगंगानगर व छोटा जिला हनुमानगढ़ है।



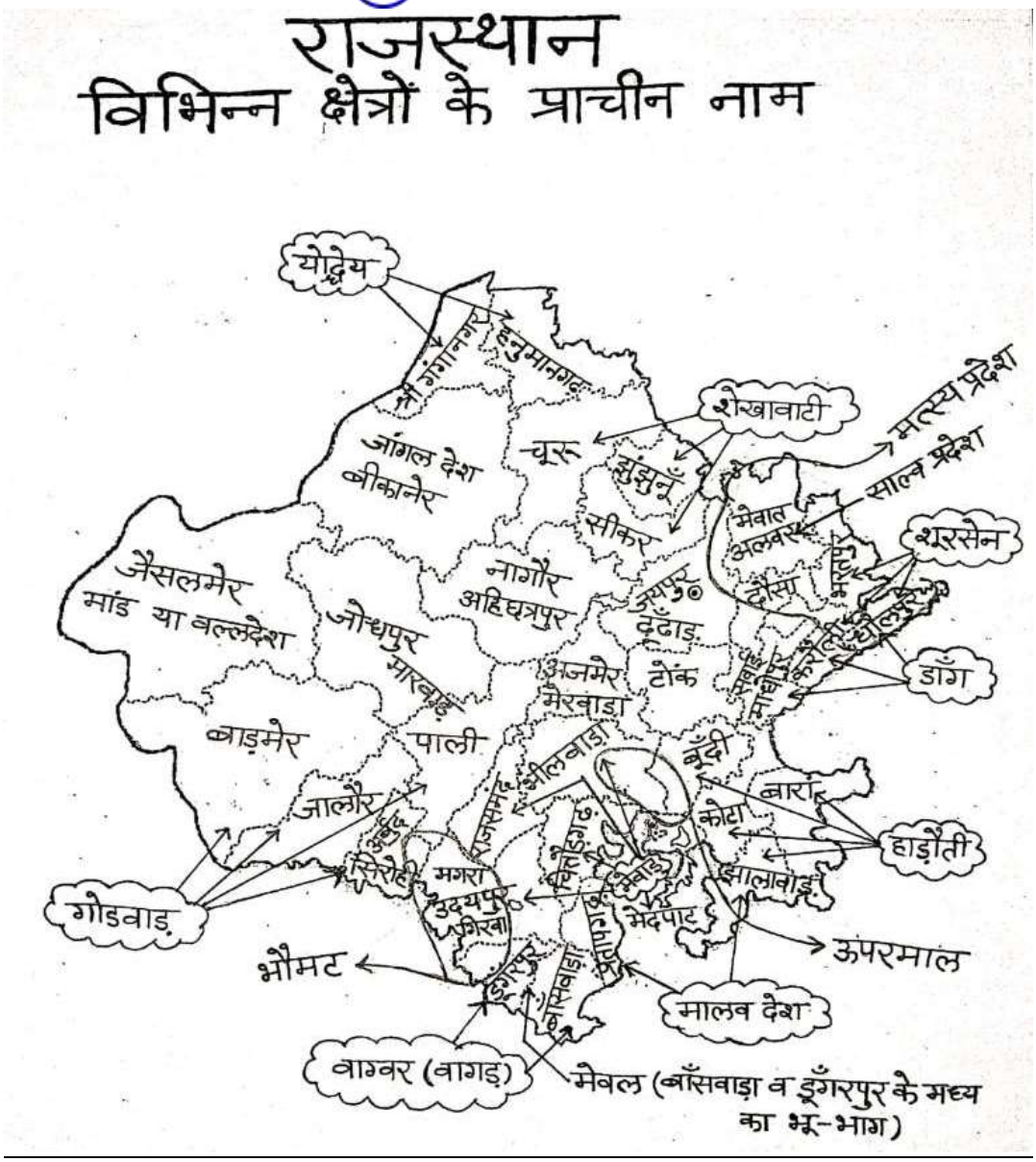
हरियाणा (1262 कि.मी.) :-

राजस्थान के 7 जिलों की सीमा हरियाणा के 7 जिलों :- सिरसा, फतेहबाद, हिसार, भिवाड़ी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, मेवात से लगती हैं। हरियाणा के साथ सर्वाधिक सीमा हनुमानगढ़ व न्यूनतम सीमा जयपुर की लगती है तथा सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ व दूर मुख्यालय जयपुर का हैं। हरियाणा सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला चुरू व छोटा जिला झुंझुनू हैं । मेवात (नुह) नव निर्मित जिला है जो राजस्थान के अलवर जिलें को छूता है।

उत्तरप्रदेश (877 कि.मी.) :-

राजस्थान के दो जिलों की सीमा उत्तरप्रदेश के दो जिलों (मथूरा व आगरा) से लगती हैं। उत्तरप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा भरतपुर व न्यूनतम धौलपुर की लगती हैं। उत्तरप्रदेश की सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय भरतपुर व दूर जिला मुख्यालय धौलपुर हैं। उत्तरप्रदेश की सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भरतपुर व छोटा जिला धौलपुर हैं।

राजस्थान
विभिन्न क्षेत्रों के प्राचीन नाम



प्राचीन भौगोलिक क्षेत्रों की वर्तमान स्थिति

जांगल देश – *बीकानेर और जोधपुर जिलें का उत्तरी भाग*

यौद्धेय – *हनुमानगढ़ और गंगानगर के आस - पास का क्षेत्र*

गिरवा – *उदयपुर में चारों और पहाड़ियां होने के कारण उदयपुर की आकृति एक तश्तरी नुमा बेसिन जैसी है जिसे स्थानीय भाषा में गिरवा कहते हैं।*

गौडवाड़ – *दक्षिण पूर्वी बाड़मेर, पश्चिमी सिरोही, जालौर*

अहिछत्रपुर - *नागौर*

राठ – *अलवर जिलें का हरियाणा राज्य से लगता क्षेत्र*

शेखावाटी – *चूरू, सीकर, झुंझुनू जिलें*

ढूंढाड़ – *जयपुर में आस - पास का क्षेत्र, दौसा*

कुरुदेश – *अलवर जिलें का उत्तरी भाग*

आर्बुद व चंद्रावती - *सिरोही व आबू के आस - पास का क्षेत्र*

मांडया वल्लभ देश – *जैसलमेर*

वागडया वाग्वर – *डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़*

मेवल – *डूंगरपुर बांसवाड़ा के मध्य का भाग*

मरुवार या मारवाड़ – *जोधपुर व आस - पास का क्षेत्र*

मेवात – *अलवर व आस - पास का प्रदेश*

हाड़ोती – *कोटा, बूंदी, झालावाड़ व बारां जिलें*

तोशावाटी – *शेखावाटी में कांतिली नदी का अपवाह क्षेत्र जहाँ प्रारंभ में तवर या तोमर वंशीय शासकों का अधिपत्य रहा*

बांगड़ या बांगर – *पाली, नागौर, सीकर, व झुंझुनू जिलें का कुछ भाग (लूनी नदी का अपवाह क्षेत्र)*

मत्स्य – *अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली*

मेरु – *अरावली पर्वतीय प्रदेश*

गुर्जरत्रा – जोधपुर जिलें का दक्षिणी भाग (मंडोर)

मेरवाड़ा – अजमेर व राजसमंद जिलें का दिवेर क्षेत्र

खेराड व मालखेराड – भीलवाड़ा जिलें के जहाजपुर तहसील व टोंक जिलें का अधिकांश भाग

मालव देश – प्रतापगढ़, झालावाड़

थली – बीकानेर, चूरू का अधिकांश भाग एवं दक्षिणी गंगानगर की मरुस्थलीय भूमि

भोमट क्षेत्र – डूंगरपुर, पूर्वी सिरोही, उदयपुर जिलें का अरावली पर्वतीय आदिवासी क्षेत्र

मालव प्रदेश – अलवर का क्षेत्र

भोराठ का पठार – उदयपुर जिलें की गोगुंदा व राजसमंद जिलें की कुंभलगढ़ तहसीलों का क्षेत्र, कुंभलगढ़ व गोगुंदा के मध्य का पठारी भाग।

लसाडिया का पठार – उदयपुर में जयसमंद से आगे कटा फटा पठारी भाग।

देशहरो – उदयपुर में जरगा (उदयपुर), वरागा (सिरोही) पहाड़ियों के बीच का क्षेत्र सदा हरा भरा रहने के कारण देशहरो कहलाता है।

मगरा – उदयपुर का उत्तरी पश्चिमी पर्वतीय भाग मगरा कहलाता है।

ऊपर माल –

चित्तौड़गढ़ के भैंसरोडगढ़ से लेकर भीलवाड़ा के बिजौलिया तक का पठारी भाग ऊपर माल कहलाता है।

नाकोड़ा पर्वत छप्पन की पहाड़ियां – बाड़मेर के सिवाना ग्रेनाइट पर्वतीय क्षेत्र में स्थित गोलाकार पहाड़ियों का समूह नाकोड़ा पर्वत या छप्पन की पहाड़ियां कहलाती हैं ।

छप्पन का मैदान – बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ के मध्य का भाग पन का मैदान कहलाता है। यह मैदान माही नदी बनाती है।

कांठल – माही नदी के किनारे-किनारे प्रतापगढ़ का भू-भाग कांठल कहलाता है। इसलिए माही नदी को कांठल की गंगा कहते हैं।

भाखर – भाकर – पूरी सिरोही क्षेत्र में अरावली की तीव्र ढाल वाली उबड़ - खाबड़ पहाड़ियों का क्षेत्र भाखर भाकर कहलाता है।

खेराड़ – भीलवाड़ा व टोंक का वह क्षेत्र जो बना स बेसिन में स्थित है।

मालानी – जालौर और बलोत्तरा के मध्य का भाग।

देवलधमेवलिया – डूंगरपुर व बांसवाड़ा के मध्य का भाग।

लिटलरण – राजस्थान में कच्छ की खाड़ी के क्षेत्र को लिटलरण कहते हैं।

माल खेराड़ – ऊपर माल व खेराड़ क्षेत्र संयुक्त रुप में माल खेराड़ कहलाता है।

पुष्प क्षेत्र – डूंगरपुर व बांसवाड़ा संयुक्त रुप से पुष्प क्षेत्र कहलाता है।

सुजला क्षेत्र – सीकर, चूरू व नागौर संयुक्त रुप से **सुजला क्षेत्र कहलाता है।**

मालवा का क्षेत्र – झालावाड़ व प्रतापगढ़ संयुक्त रुप से मालवा का क्षेत्र कहलाता है।

धरियन – जैसलमेर जिलें का बालुका स्तूप युक्त क्षेत्र जहाँ जनसंख्या "न"के बराबर है । यह क्षेत्र धरियन कहलाता है।

भोमट – डूंगरपुर पूर्वी सिरोही व उदयपुर जिलें का आदिवासी प्रदेश भोमट कहलाता है।

कूबड़ पट्टी – नागौर के जल में फ्लोराइड की मात्रा अधिक होती है जिससे शारीरिक विकृति होने की संभावना हो जाती है। इसीलिए इस क्षेत्र को कुबड़ पट्टी के नाम से जाना जाता है।

लाठी सीरीज क्षेत्र - जैसलमेर में पोकरण से मोहनगढ़ तक पाकिस्तानी सीमा के सहारे विस्तृत एक भूगर्भीय मीठे जल की पेटी है। इस लाठी सीरीज के ऊपर सेवण घास उगती है।

बागड़/बांगर- शेखावटी व मरु प्रदेश के मध्य संकरी पेटी।

वागड़ – डूंगरपुर व बांसवाड़ा का क्षेत्र।

बीहड़/डांग/खादर- चंबल नदी सवाई माधोपुर करौली धौलपुर में बड़े-बड़े गड्डों का निर्माण करती है। इन गड्ढों को बीहड़/डांग/खादर नाम से पुकारा जाता है। सर्वाधिक बीहड़ धौलपुर में है।

शुरसेन - भरतपुर, धौलपुर, करौली।

ढूंढाड़ - जयपुर के आस-पास का क्षेत्र।

गुजर्राजा - जोधपुर का दक्षिण का भाग ।

माल/वल - जैसलमेर

अरावली - आडवाल।

राजस्थान के उपक्षेत्रों के नाम

प्राचीन नाम		**स्थानी / क्षेत्र**
राजस्थान का हृदय	-	अजमेर
राजस्थान का धातु नगर	-	नागौर
स्वर्ण नगरी	-	जैसलमेर

हवेलियों व झरोखों का शहर - जैसलमेर
गलियों का शहर - जैसलमेर
ग्रेनाइट शहर - जालौर
राजस्थान का शिमला - माउंट आबू
राजस्थान का वेल्लोर (चि.) - भैंसरोडगढ़ दुर्ग
शिक्षा का तीर्थ स्थल - कोटा
राजस्थान का गौरव - चित्तौड़गढ़
राजस्थान का मैनचेस्टर - भीलवाड़ा
वस्त्र नगरी / टेक्सटाइल सिटी - भीलवाड़ा
रेगिस्तान का गुलाब - जैसलमेर
राजस्थान का अंडमान - जैसलमेर
राजस्थान का अन्न भंडार - श्रीगंगानगर
सिटी ऑफ वैल्स (घाटियाँ) - झालरापाटन
तांबा जिला - झुंझुनू
तीर्थों का भांजा - मचकुंड (धौलपुर)
तीर्थों का मामा - पुष्कर
राजस्थान का थर्मोपल्ली का शहर - हल्दीघाटी बावड़ियों बूंदी
थार का घड़ा - चाँदन नलकूप
थार का प्रवेश द्वार - जोधपुर
सूर्य नगरी - जोधपुर
मरू प्रदेश - जोधपुर
माउंटेन व माउंटेन का शहर - उदयपुर
झीलों की नगरी - उदयपुर
राजस्थान का कश्मीर - उदयपुर
पूर्व का वेनिस - उदयपुर
सौ दीपों का शहर - बाँसवाड़ा
आदिवासियों का शहर - बाँसवाड़ा
महान भारतीय जल विभाजक रेखा - अरावली पर्वतमाला
राजस्थान की कामधेनु - चंबल नदी
वागड़ की गंगा - माही नदी
काँठल की गंगा - माही नदी
अर्जुन की गंगा - बाणगंगा नदी
आदिवासियों की गंगा - माही नदी
आदिवासियों का कुंभ - बेणेश्वर
खनिजों का अजायबघर - राजस्थान
मरु त्रिकोण - जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर
कोकण तीर्थ - पुष्कर
राजस्थान का विंडसर महल - राजमहल (फर्ग्युसन्)
प्रहरी मीनार - एक थंबा महल (जोधपुर)
राजस्थान राज्य की आत्मा - घूमर नृत्य
राजस्थान का खेल नृत्य - नेजा नृत्य
लोकनाट्यों का मेरु नाट्य - राई नृत्य
समस्त किलों का सिरमौर - चित्तौड़गढ़ का दुर्ग
हिंदू देवी-देवताओं का अजायबघर - विजय स्तंभ
मेवाड़ की आंख - कटारगढ़
जलदुर्ग - गागरौन दुर्ग
मृत नदी - घग्गर नदी
मसूरदी नदी - काकनी / काकनेय नदी
ढेबर झील - जयसमंद झील
रामसर साइट - सांभर झील
मारवाड़ का अमृत सरोवर - जवाई बांध
भारतीय बाघों का घर - रणथंभौर
ग्रेट इंडियन बर्ड - गोडावण
रेगिस्तान का कल्पवृक्ष - खेजड़ी
चीतल की मातृभूमि - सीता माता
आड़ा हूला - पैंगोलिन
शमी वृक्ष - खेजड़ी
भारतीय मेरिनो - चोकला
घोड़ा जीरा - ईसबगोल
राजस्थान का नागपुर - झालावाड़



महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. राजस्थान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा कितनी लंबी है?

A. 4850 KM B. 4963 KM

C. 4920 KM D. 4810 KM

उत्तर - (A)

2. राजस्थान में क्षेत्रफल की दृष्टि से जिलों का सही घटता हुआ क्रम है -

A. जैसलमेर > बीकानेर > जोधपुर > बाड़मेर

B. जैसलमेर > जोधपुर > बीकानेर > बाड़मेर

C. जैसलमेर > बाड़मेर > बीकानेर > जोधपुर

D. जैसलमेर > जोधपुर > बाड़मेर > बीकानेर

उत्तर - (C)

3. राजस्थान के संलग्न जिले हैं?

A. सिरोही, पाली, नागौर

B. चूरु, झुंझुनूं, जयपुर

C. सिरोही, बाड़मेर, जैसलमेर

D. झालावाड़, बूंदी, टोंक

उत्तर - (A)

4. सर्वाधिक लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा किस जिले की हैं?

A. बाड़मेर B. जैसलमेर

C. बीकानेर D. गंगानगर

उत्तर – B

5. कर्क रेखा राज्य के किन जिलों से होकर गुजरती हैं?

A. बारां व झालावाड़ B. बाड़मेर व चूरू

C. बांसवाड़ा व डूंगरपुर D. बूंदी व भीलवाड़ा

उत्तर – C

6. राजस्थान के किस जिले से अधिकतम जिलों की सीमाएँ स्पर्श करती हैं, वह हैं?

A. अजमेर B. पाली

C. भीलवाड़ा D. नागौर

उत्तर – B

7. निम्न में से राजस्थान का कौन सा शहर पाकिस्तान सीमा के निकट हैं?

A. बीकानेर B. जैसलमेर

C. गंगानगर D. हनुमानगढ़

उत्तर – C

8. राजस्थान में कौन सा क्षेत्र मालव क्षेत्र के नाम से जाना जाता हैं?

A. बांसवाड़ा - प्रतापगढ़ B. डूंगरपुर – प्रतापगढ़

C. झालावाड़ - प्रतापगढ़ D. बूंदी - झालावाड़

उत्तर – C

9. राजस्थान का प्रवेश द्वार किसे कहा जाता हैं?

A. झालावाड़ B. धौलपुर

C. हनुमानगढ़ D. भरतपुर

उत्तर – D

10. मध्य प्रदेश का वह जिला जो तीन ओर से राजस्थान से घिरा हुआ हैं?

A. नीमच B. रतलाम

C. मंदसौर D.श्योपुर

उत्तर - A

अध्याय – 6
कृषि

राजस्थान की कृषि

ऋतु के आधार पर

- **खरीफ की फसलें**
  - खरीफ की प्रमुख फसलें धान, मक्का, ज्वार, मूंग, मूंगफली, लोबिया, कपास, जूट, बाजरा, ग्वार, तिल, मोठ आदि हैं।
  - (ब) खरीफ की फसलों की बुवाई जुलाई में और कटाई अक्टूबर महीने में की जाती है।
- **रबी की फसलें**
  - रबी की प्रमुख फसलें जौ, राई, गेहूँ, जई, सरसों, मैथी, चना, मटर आदि हैं।
  - (ब) रबी की फसल की बुवाई अक्टूबर में तथा कटाई अप्रैल महीने में की जाती है।
- **जायद की फसलें**
  - जायद की प्रमुख फसलों में तरबूज, खरबूजा, टिंडा, ककड़ी, खीरे, मिर्च आदि हैं।
  - (ब) जायद की फसल की बुवाई मार्च में तथा कटाई जून महीने में की जाती है।

- उपयोग के आधार पर
  - **खाद्यान फसलें** - राजस्थान की खाद्यान फसलें गेहूँ, चावल (धान), बाजरा, जौ, मक्का, ज्वार, दलहन, तिलहन प्रमुख है।
  - **वाणिज्यिक फसलें** - राजस्थान की वाणिज्यिक फसलें कपास और गन्ना है।
- राजस्थान में खाद्यान्नों में गेहूं, जौ, चावल, मक्का, बाजरा, ज्वार, रबी एवं खरीफ की दलहन फसलें शामिल हैं।
- **गेहूं**
- राज्य में सर्वाधिक क्षेत्र में खाद्यान्न फसल के रूप में गेहूं बोया जाता है। गेहूं को बोये जाने के समय तापमान कम से कम 8° से 10° सें. तक होना चाहिए तथा पकने के समय तापमान 15° से 20° सें. तक होना चाहिए।
- 50 सेमी. से 100 सेमी. के बीच वर्षा की आवश्यकता होती है। राजस्थान में साधारण गेहूं (ट्रीटीकम) एवं मेकरोनी गेहूं (लाल गेहूं) सर्वाधिक पैदा होता है। गेहूं उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान के जयपुर, अलवर, कोटा, गंगानगर, हनुमानगढ़ और सवाई माधोपुर जिलें हैं।
- राजस्थान में सर्वाधिक गेहूं गंगानगर जिलें में उत्पादित होता है इसलिए गंगानगर जिला अन्न का भण्डार कहलाता है।
- नाइट्रोजन युक्त दोमट मिट्टी, महीन काँप मिट्टी व चीका प्रधान मिट्टी गेहूं उत्पादन हेतु उपयुक्त होती है। मिट्टी का ph मान 5 से 7.5 के मध्य होना चाहिए।
- राजस्थान में दुर्गापुरा-65,कल्याण सोना, मैक्सिकन, सोनेरा, शरबती, कोहिनूर, सोनालिका, गंगा सुनहरी, मंगला, कार्निया-65 ,लाल बहादूर , चम्बल-65, राजस्थान-3077 आदि किस्में बोई जाती हैं।
- गेहूं में छाछ्या, करजवा, रतुआ, चेपा रोग पाए जाते हैं।
- इण्डिया मिक्स- गेहूं, मक्का व सोयाबीन का मिश्रित आटा।

जौ

- राजस्थान में जौ उत्पादन क्षेत्रफल लगभग 2.5 लाख हेक्टेयर है।
- भारत के कुल उत्पादन का 1/4 भाग राजस्थान में पैदा होता है। जौ शीतोष्ण जलवायु का पौधा है तथा रबी की फसल है।
- जौ की बुवाई के समय लगभग 10° सें. तापमान की आवश्यकता है तथा काटते समय 20° से 22° सेन्टीग्रेड तापमान होना चाहिए।
- जौ के लिए शुष्क और बालू मिश्रित काँप मिट्टी उपयुक्त रहती है।
- जौ की प्रमुख किस्में ज्योतिराजकिरण, R-D. 2503, मोल्वा आदि हैं। राजस्थान में प्रमुख जौ उत्पादन जिलें जयपुर (सर्वाधिक), उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा व अजमेर हैं।
- जौ का उपयोग मिसी रोटी बनाने, मधुमेह रोगी के उपचार, शराब व बीयर बनाने, माल्ट उद्योग में किया जाता है।

बाजरा

- विश्व का सर्वाधिक बाजरा भारत में पैदा होता है। बाजरे के उत्पादन एवं क्षेत्रफल में राजस्थान का भारत में प्रथम स्थान है। राजस्थान देश का लगभग एक तिहाई बाजरा उत्पादित करता है।
- बाजरा राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्र पर बोई जाने वाली खरीफ की फसल है।
- बाजरा के लिए शुष्क जलवायु उपयुक्त रहती है।
- बाजरे की बुवाई मई, जून या जुलाई माह में होती है। बाजरे की बुवाई करते समय तापमान 35° से 40° सेन्टीग्रेड तक होना चाहिए।

- बाजरे के लिए 50 सेमी. से कम वर्षा उपयुक्त रहती है। बाजरा बलुई, बंजर, मरुस्थलीय तथा अर्द्ध काँपीय मिट्टी में पैदा होता है।
- बाजरा की प्रमुख किस्में ICTP - 8203,WCC - 75,राजस्थान - 171,RHB - 30,RHB - 58,RHB - 911, राजस्थान बाजरा चरी-2 है। बाजरा को जोगिया, ग्रीन ईयर, कण्डुआ, सूखा रोग नुकसान पहुँचाते है।
- केन्द्र सरकार द्वारा अखिल भारतीय समन्वित बाजरा सुधार परियोजना व मिलेट डायरेक्टोरेट को क्रमशः पूना व चेन्नई से जोधपुर व जयपुर स्थानांतरित किया गया है। दो नए केन्द्र बीकानेर एवं जोधपुर में स्थापित किए गए है।

मक्का

- भारत के कुल मक्का उत्पादन का 1/8 भाग राजस्थान में उत्पादित होता है। मक्का मुख्यतर खरीफ की फसल है।
- ऊष्ण एवं आर्द्र जलवायु मक्का के लिए उपयुक्त रहती है। मक्का की बुवाई करते समय औसत तापमान 21° से 27° सेन्टीग्रेड तक होना चाहिए।
- मक्का के लिए 50 सेमी. से 80 सेमी. तक वर्षा की आवश्यकता रहती है। मक्का के लिए नाइट्रोजन व जीवाँ शयुक्त मिट्टी, दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त रहती है।
- मक्का की प्रमुख किस्में माही कंचन, माही धवल, सविता (संकर किस्म), नवजोत, गंगा-2,गंगा-11,अगेती-76,किरण आदि है।
- मक्का की हरी पत्तियों से साईलेज चारा बनाया जाता है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार मक्के के पौधे का 80 प्रतिशत विकास रात के समय होता है।
- बांसवाड़ा जिलें के बोरवर गाँव में कृषि अनुसंधान केन्द्र संचालित है। इस केन्द्र ने मक्का की संयुक्त किस्में माही कंचन एवं माही धवल विकसित की है।
- मक्का के दानों से मांडी (स्टार्च), ग्लूकोज तथा एल्कोहल तैयार किया जाता है। मक्का मेवाड़ क्षेत्र का प्रमुख खाद्यान्न है।

चावल -

- चावल ऊष्ण कटिबंधीय पौधा है। इसके लिए 20° से 27° सेन्टीग्रेड तक तापमान एवं 125 से 200 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता रहती है।
- चावल के लिए काँपीय, दोमट, चिकनी मिट्टी उपयुक्त रहती है।
- वर्तमान में राजस्थान में जापानी पद्धति से चावल की खेती की जाती है। चावल की प्रमुख किस्में कावेरी, जया, परमल, चम्बल, गरडा़बासमती, NP-130,BK-190,T& 29,सफेदा एवं लकडा़, माही सुगंधा (कृषि अनुसंधान केन्द्र, बांसवाड़ा द्वारा विकसित) है।
- राजस्थान में प्रमुख चावल उत्पादक जिलें बांसवाड़ा, बूंदी, हनुमानगढ़, बारां, कोटा, उदयपुर और गंगानगर है।
- राजस्थान का लगभग आधा चावल उत्पादन केवल दो जिलों बांसवाड़ा व हनुमानगढ़ में होता है।
- राजस्थान में चावल का प्रति हैक्टेयर उत्पादन सर्वाधिक हनुमानगढ़ जिलें में होता है।

ज्वार -

- ज्वार ऊष्ण कटिबंधीय खरीफ की फसल है तथा इसके लिए औसत तापमान 20° से 32° सेन्टीग्रेड तथा 50 से 60 सेमी. वार्षिक वर्षा उपयुक्त रहती है। ज्वार की बुवाई हेतु दोमट मिट्टी अथवा गहरी या मध्य काली मिट्टी उपयुक्त रहती है।
- राजस्थान में ज्वार की दो प्रमुख किस्में-
- राजस्थान चरी-1 एवं चरी-2 चारे के लिए तैयार की गई है।

दलहन -

- राज्य में रबी मौसम में चना, मटर व मसूर तथा खरीफ के मौसम में मोठ, उड़द, मूंग, चावल व अरहर प्रमुख दलहनी फसलें है।
- दलहन का उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से 1974 -75 में केन्द्र संचालित दलहन विकास योजना शुरू की गई।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से बाजरा, गेहूं के बाद चने को तीसरा स्थान प्राप्त है।
- राजस्थान में कुल दलहनी फसलों में चने का उत्पादन सर्वाधिक होता है।
- चना की बुवाई के समय तापमान लगभग 20° सेन्टीग्रेड एवं काटते समय तापमान 30° से 35° सेन्टीग्रेड तक होना चाहिए।
- चना के लिए हल्की बलुई मिट्टी उपयुक्त रहती है तथा 50 से 85 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता रहती है।
- चना की प्रमुख किस्म RSG - 2,BJ-209,GNG-16,RS& - 10,वरदान, सम्राट, काबुली आदि है।
- चना का उपयोग दाल बनाने, जानवरों को खिलाने तथा माल्ट उद्योग में किया जाता है।
- गेहूं व जौ के साथ चना बोना स्थानीय भाषा में गोचनी या बेझड़ कहलाता है।

- **मोठ**- खरीफ की दलहन फसलों में मोठ सर्वाधिक भू-भाग पर बोया जाता है।
- उड़द- उड़द ऊष्ण कटिबंधीय पौधा है। इसके लिए दोमट तथा भारी दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है।

व्यापारिक फसलें

- **गन्ना** -
- गन्ना एक प्रमुख व्यापारिक फसल है, यह मूल रूप से भारतीय पौधा है। विश्व में भारत का गन्ना उत्पादन में प्रथम स्थान है।
- गन्ने की खेती के लिए 15° से 24° सेन्टीग्रेट तापमान तथा 100 से 200 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता रहती है।
- राजस्थान में गन्ना बूंदी (सर्वाधिक), उदयपुर, चितौड़गढ़ व गंगानगर जिलों में उत्पादित होता है।
- गन्ने में लाल सड़न रोग, पाइरिला, कण्डवा, रेडक्रास आदि रोग लग जाते हैं।
- **कपास** -
- कपास मूलतः भारतीय पौधा है। कपास के लिए 20° से 30° सेन्टीग्रेट तापमान, 50 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा तथा नमी युक्त चिकनी मिट्टी या काली मिट्टी उपयुक्त रहती है।
- राजस्थान में कपास को ग्रामीण भाषा में बणीया कहा जाता है। इसे "सफेद सोना" भी कहा जाता है।
- कपास की बुवाई मई - जून के महीने में की जाती है। ज्यादा ठंड से कपास की फसल को बालबीविल कीड़ा नुकसान पहुँचाता है। इसकी रोग प्रतिरोधक फसल भिण्डी होती है।
- राजस्थान में कपास गंगानगर (सर्वाधिक), हनुमानगढ़, अजमेर, भीलवाड़ा, झालावाड़, चितौड़गढ़, उदयपुर, पाली, कोटा, बूंदी व झालावाड़ जिलों में उत्पादित होता है।
- कपास की एक गांठ का वजन 170 किलोग्राम होता है।
- राज्य में बोई जाने वाली कपास के विभिन्न प्रकार :
-
- नरमा - श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ में बोयी जाती है।
- 2.अमेरिकन कपास - लम्बे रेशे वाली कपास गंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में सर्वाधिक होती है।
- 3.मालवी कपास- यह कपास कोटा, बूंदी, झालावाड़ व टोंक जिलों में बोयी जाती है।
- 4.देशी कपास- यह कपास उदयपुर, चितौड़गढ़ व बांसवाड़ा जिलों में सर्वाधिक बोयी जाती है।
- 5.मरूविकास (RAJ - H - H.-16) - राजस्थान में कपास की पहली संकर किस्म।
- बी.टी. कपास- बेसिलस थ्रेजेन्सिस (विशेष क्रिस्टल प्रोटीन बनाने वाला) का बीज में प्रत्यारोपण। इसमें जैव-अभियांत्रिकी तकनीक से बीज की संरचना में डी.एन.ए. की स्थिति को प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और टाक्सीकेट्स में बदला जाता है। राजस्थान के जैसलमेर व चुरू जिलों में कपास का उत्पादन नहीं होता है।

3. तंबाकू-

- तम्बाकू का पौधा भारत में सर्वप्रथम 1508 में पुर्तगालियों द्वारा लाया गया।
- तम्बाकू के लिए 20° से 35° सेन्टीग्रेड तापमान तथा 50 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता रहती है।
- तम्बाकू एक ऊष्ण कटिबंधीय पौधा है। राजस्थान में तम्बाकू की दो किस्में प्रमुख हैं-1. निकोटिना टुबेकम व 2. निकोटिना रास्टिका।

4. ग्वार-

- ग्वार कपड़ा उद्योग, श्रृंगार, विस्फोटक सामग्री बनाने के काम आता है। ग्वार का उत्पादन बढ़ाने हेतु राजस्थान में दुर्गापुरा (जयपुर) स्थित कृषि अनुसंधान केन्द्र उन्नत किस्में तैयार करता है। सबसे बड़ी ग्वार मण्डी जोधपुर में स्थित है तथा ग्वार गम उद्योग भी जोधपुर में सर्वाधिक है। जोधपुर में ग्वार गम जाँच लैब स्थापित की गई है।

खजूर-

- खजूर अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में स्थित है। वर्तमान में बीकानेर क्षेत्र में खजूर की खेती की जाती है।
- खजूर की प्रमुख किस्में हिवानी, मेंजुल, अरबी खजूर, बहरी, जाहिंदी आदि हैं। खजूर में लगने वाला प्रमुख रोग ग्रोफियोला है।
- देश की पहली व एशिया की दूसरी सबसे बड़ी खजूर पौध प्रयोगशाला जोधपुर के चोपासनी में स्थापित की गई है।
- ईसबगोल (घोड़ा जीरा) -
- ईसबगोल के प्रमुख उत्पादक जिलें जालौर, बाड़मेर, सिरोही, नागौर, पाली तथा जोधपुर हैं। विश्व का लगभग 80 प्रतिशत ईसबगोल भारत में पैदा होता है।

8. माही कंचन और माही धवल किसकी किस्में हैं?

a. चावल
b. गेहूँ
c. मक्का
d. जौ

उत्तर - (c)

9. कौनसी तिलहन की फसल राजस्थान में खरीफ के मौसम में उत्पादित नहीं की जाती है?

a. मूंगफली
b. तिल
c. सोयाबीन
d. सरसों

उत्तर-(d)

10. आदिवासियों द्वारा स्थानान्तरित कृषि को कहाँ जाता है-

a. चिमाता
b. दजिया
c. वालरा
d. कोई नहीं

उत्तर - (c)

अध्याय – 7
पशुधन / पशुपालन

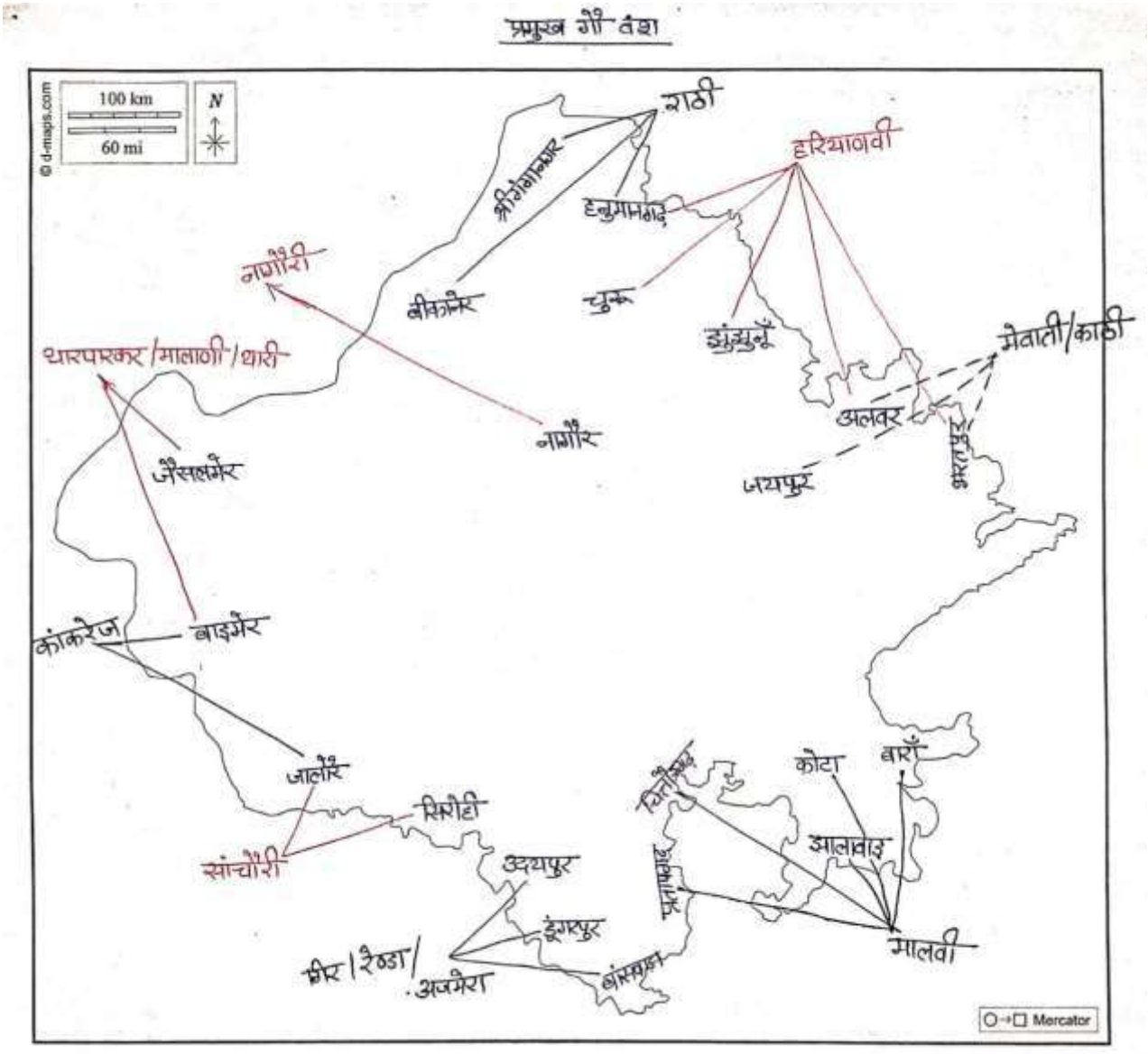
पशुपालन

राजस्थान में 20 वीं पशुगणना

- 20 वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान में कुल पशुधन 56.8 मिलियन (5.68 करोड़) है। जो कि 2012 की 577.32 लाख (5.77 करोड़) था।
- इस प्रकार 2019 में कुल पशुओं की संख्या में लगभग 1.66 प्रतिशत की कमी देखी गई है।
- राजस्थान 568 लाख पशुओं के साथ भारत में दूसरे स्थान पर है। पहला स्थान उत्तर प्रदेश का है।
- राजस्थान गौवंश के मामले में 2012 के 133 लाख की तुलना में 2019 में 139 लाख पशुओं के साथ छठे स्थान पर है। गोवंश में 4.41% की वृद्धि हुई है।
- राजस्थान भैंसो के मामले में 2012 के 130 लाख की तुलना में 2019 में 137 लाख पशुओं के साथ दूसरे स्थान पर है। भैंसों में 5.53% की वृद्धि हुई है।
- राजस्थान भेड़ की संख्या के मामले में 2012 के 9.1 मिलियन की तुलना में 2019 में 79 लाख पशुओं के साथ चौथे स्थान पर है। भेड़ में 12.95% की कमी हुई है।
- राजस्थान बकरी के मामले में 2012 के 216.7 लाख की तुलना में 2019 में 208.4 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। बकरियों की संख्या में 3.81% की कमी हुई है।
- राजस्थान ऊँट के मामले में 2012 के 326 लाख की तुलना में 2019 में 213 लाख **पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। ऊंटों की संख्या में 34.69% की कमी हुई है।**
- **राजस्थान घोड़ों के मामले में** 2012 के 38 लाख की तुलना में 2019 में 34 लाख पशुओं के साथ **तीसरे स्थान पर है।** घोड़ों की संख्या में में 10.85% की कमी हुई है।
- **राजस्थान गधों के मामले में** 2012 के 81 लाख की तुलना में 2019 में 23 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। गधों में 71.31% की कमी हुई है।

पशु	कुल संख्या (लाख)	अधिकतम	न्यूनतम
बकरी	208.4	बाड़मेर,	धौलपुर
गाय	139	उदयपुर	धौलपुर
भैंस	137	जयपुर	जैसलमेर
भेड़	79	बाड़मेर	बाँसवाड़ा
ऊँट	21.3	जैसलमेर	प्रतापगढ़
गधे	23	बाड़मेर	टोंक
घोड़े	34	बीकानेर	डूंगरपूर

राजस्थान में गाय की विभिन्न नस्लें



1. **गिर :-**

- यह अजमेर, भीलवाड़ा, किशनगढ़, चित्तौड़गढ़ व बूंदी आदि में पाई जाती है।
- मूल स्थान गुजरात है ।
- इसका अन्य नाम अजमेरा अथवा रहना भी है ।
- यह अधिक दूध देने के लिए प्रसिद्ध है।

2. **थारपारकर :-**

- यह जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर व जालौर में पाई जाती है।
- इसका मूल स्थान मालाणी गाँव जैसलमेर है।

3. **नागौरी :-**

- यह नागौर, जोधपुर, बीकानेर, नोखा आदि में पाई जाती है।

- ***इसका मूल स्थान नागौर जिले का सुहालक प्रदेश हैं। नागौरी बैल कृषि हेतु प्रसिद्ध हैं।***

4. ***राठी :-***

- ***यह बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर व चूरू आदि*** *में पाई जाती हैं ।*
- *यह लाल सिंधी व साहीवाल की मिश्रित नस्ल हैं* ***जो दूध देने में अग्रणी हैं ।***
- ***इसे राजस्थान की कामधेनु भी कहा जाता हैं।***

1. ***कांकरेज :-***

- ***बाड़मेर, जालौर व नेहड़ क्षेत्र*** *में पाई जाती हैं । इसका मूल स्थान गुजरात का कच्छ का रण हैं।*
- ***बोझा ढ़ोने व दुग्ध उत्पादन*** *हेतु प्रसिद्ध हैं। बैल अधिक बोझा ढ़ोने एवं तीव्र गति के लिए प्रसिद्ध हैं।*

2. ***हरियाणवी :-***

- ***सीकर, झुंझुनूं, जयपुर, श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़*** *आदि में पाई जाती हैं ।*
- *इसका मूल स्थान रोहतक, हिसार, व गुड़गाँव हरियाणा हैं । यह दुग्ध भार वाहन दोनों दृष्टियों से उपयुक्त हैं।*

3. ***मालवी :-***

- ***झालावाड़, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, कोटा, व उदयपुर में*** *पाई जाती हैं।*
- *मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र इसका मूल स्थान हैं ।*
- *यह नस्ल नागौरी की तरह भारवाही नस्ल हैं।*
- ***मालवी अलवर व भरतपुर में हल जोतने हेतु प्रसिद्ध हैं।***

4. ***सांचौरी : -***

- *सांचौर, उदयपुर, पाली, सिरोही में पाई जाती हैं।*

5. ***मेवाती :-***

- *अलवर व भरतपुर में पाई जाती हैं।*

<u>विदेशी नस्लें</u>

1. ***जर्सी गाय –*** *यह नस्ल मूलतः* ***अमेरिकी*** *हैं । यह सर्वाधिक दूध देने हेतु प्रसिद्ध हैं।*
2. ***हॉलिस्टिन गाय –*** *हॉलिस्टिन गाय का मूल स्थान* ***हॉलैंड व अमेरिका*** *हैं। यह भी अधिक दूध देती हैं।*
3. ***रेड डेन गाय –*** *रेड डेन का मूल स्थान* ***डेनमार्क*** *हैं*

भैंसों की नस्लें

1. ***मुर्रह – राजस्थान में सर्वाधिक संख्या वाली नस्ल, भैंस की सर्वोत्तम नस्ल।***
2. ***जाफराबादी – सर्वाधिक शक्तिशाली*** *नस्ल।*
3. ***मेहसाणी –*** *मूल स्थान मेहसाणा।*
4. ***बदावारी / भदावरी –*** *मूल स्थान उत्तरप्रदेश*

भेड़-

- ***देश में भेड़ों की संख्या के आधार पर राज्य का तीसरा स्थान हैं***
- ***सर्वाधिक भेड़ें बाड़मेर में*** *और* ***न्यूनतम बाँसवाड़ा में*** *पाई जाती हैं*

भेड़ों की नस्लें

8. ***जैसलमेरी भेड़ :-***

- *यह जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर में पश्चिमी भाग में पाई जाती है।*
- ***सर्वाधिक ऊन** इस नस्ल की भेड़ों से प्राप्त होती है।*

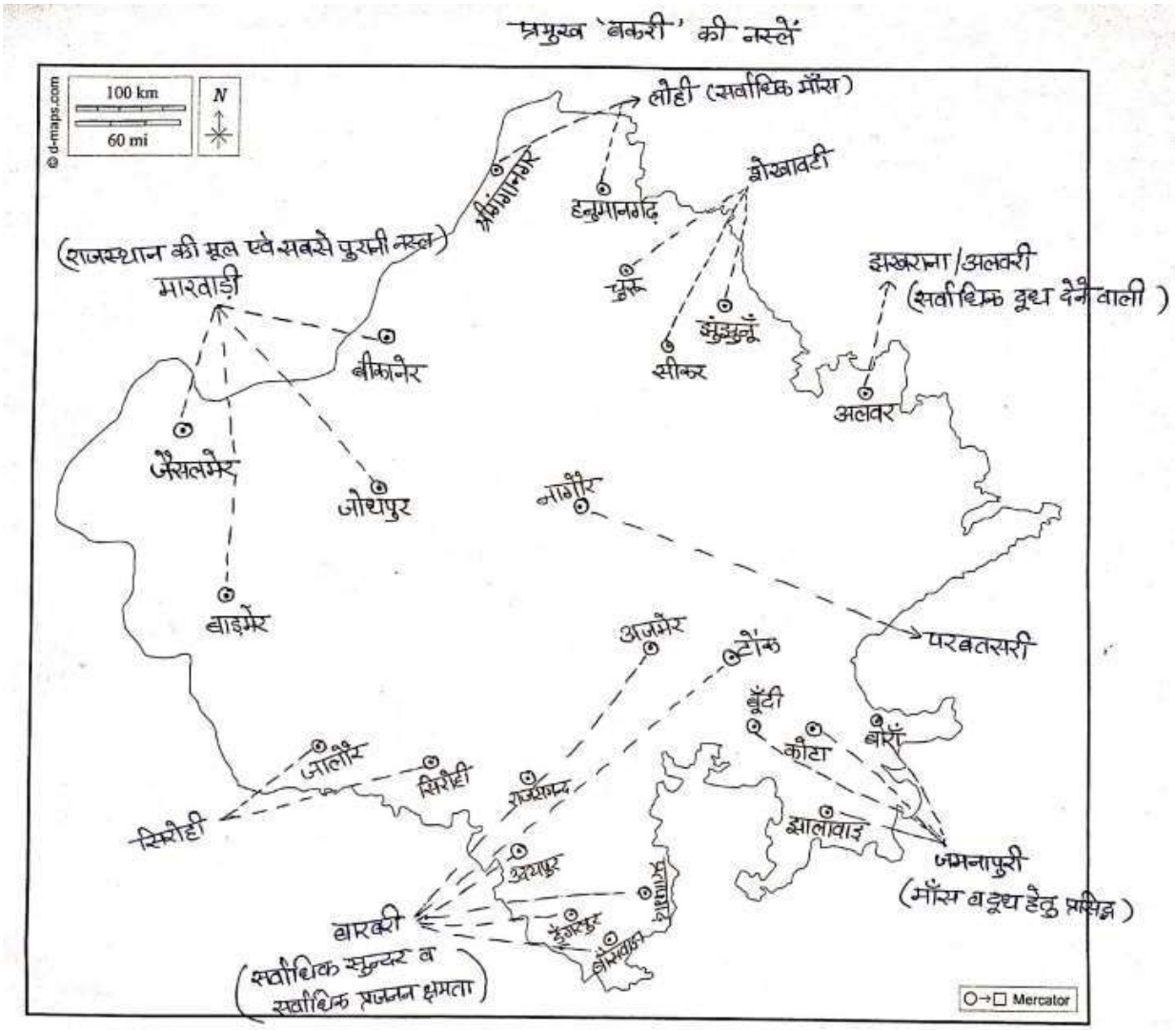
भेड़ों की विदेशी नस्लें

1. ***रूसी मेरिनों भेड़ –** टोंक, सीकर, जयपुर में बहुतायत में पायी जाती है।*
2. ***रेम्बुलेट भेड़ –** टोंक*
3. ***कोरिडेल भेड़ –** टोंक में बहुतायत में पायी जाती है।*
4. ***डोर्सेट भेड़ –** चित्तौड़गढ़ में बहुतायत में पायी जाती है।*

बकरी-

- ***राजस्थान का देश में प्रथम स्थान है।** नागौर जिले का वरुण गाँव बकरियों के लिए प्रसिद्ध है।*
- ***सर्वाधिक बकरियाँ बाड़मेर, जोधपुर में** जबकि **न्यूनतम बकरियाँ धौलपुर में** पाई जाती है।*

बकरी की नस्लें



1. ***मारवाड़ी या लोही बकरी :-***

- *राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों जैसे जोधपुर, पाली, नागौर, बीकानेर, जालौर, जैसलमेर व बाड़मेर आदि में पाई जाती है ।*
- *इसके शरीर से प्राप्त होने वाले **बाल गलीचे व नंदा** बनाने के काम आते हैं।*

2. ***जखराना या अलवरी :-***

- *मूल स्थान बहरोड़ (जखराना गाँव)अलवर ।*
- *यह **अधिक दूध** देने के लिए प्रसिद्ध है।*

अध्याय - 5

राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास

1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान

आधुनिक राजस्थान

राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां

क्र. सं.	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
1.	करौली	हरबक्षपालसिंह	9 नवम्बर, 1817	खिराज से मुक्त
2.	टोंक	अमीर खाँ	15 नवम्बर, 1817	-
3.	कोटा	उम्मेद सिंह	26 दिसम्बर, 1817	2,44,700 रु.
4.	जोधपुर	मानसिंह	6 जनवरी, 1818	1,08,000 रु.
5.	उदयपुर	भीमसिंह	22 जनवरी, 1818	राज्य की आय का 1/4 भाग
6.	बूँदी	बिसनसिंह	10 फरवरी, 1818	80,000 रु.
7.	बीकानेर	सूरतसिंह	21 मार्च, 1818	मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त
8.	किशनगढ़	कल्याणसिंह	7 अप्रैल , 1818	खिराज से मुक्त
9.	जयपुर	जगतसिंह	15 अप्रैल , 1818	संधि के प्रथम वर्ष कुछ नहीं, दूसरे वर्ष 4 लाख, चौथे वर्ष 6 लाख, पाँचवें वर्ष 7 लाख, छठें वर्ष 8 लाख फिर 8 लाख निश्चित।
10.	जैसलमेर	मूलराज	2 जनवरी, 1819	मराठों को खिराज नहीं देता था, अतः खिराज से मुक्त।
11.	प्रतापगढ़	सामन्तसिंह	5 अक्टूबर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।

क्र. सं.	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
12.	डूंगरपुर	जसवन्त सिंह द्वितीय	1818 ई.	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
13.	बाँसवाड़ा	उम्मेदसिंह	25 दिसम्बर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
14.	सिरोही	शिवसिंह	11 सितम्बर, 1823	संधि के तीन वर्ष तक खिराज से मुक्त उसके बाद आय के प्रति रुपये पर छः आना।
15.	झालावाड़	मदनसिंह	10 अप्रैल, 1838	80,000 रु. वार्षिक।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही राजपूत राज्यों पर मुग़ल केन्द्रीय सत्ता का नियंत्रण ढीला पड़ गया।
- सभी राजपूत राज्य अपने राज्य का विस्तार करने तथा पड़ौसी राज्य पर राजनैतिक वर्चस्व स्थापित कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के प्रयत्न में लग गए।
- इस प्रकार के प्रयत्नों के फलस्वरूप राजपूत राज्यों में पारस्परिक संघर्ष बढ़ गये।
- शासकों ने पारस्परिक संघर्षों में सहायता प्राप्त करने के लिए बाहरी ताकतों (मराठा, अंग्रेज, होल्कर आदि) का सहारा लेने लगे।
- जब राज्यों में उत्तराधिकार संघर्ष में मराठों का हस्तक्षेप हुआ तो राजपूताना के शासकों ने मराठा के विरुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सहायता माँगी लेकिन अंग्रेजों ने इन प्रस्तावों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उस समय अंग्रेजों की नीति राजपूताना के लिए मराठों से युद्ध करने की नहीं थी।
- भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन 1600 ई. में हुआ था।
- 1757 ई. में प्लासी युद्ध के पश्चात ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पहली बार भारत में बंगाल में) राजनीतिक सत्ता प्राप्त की।
- रॉबर्ट क्लाइव सन् 1757 में बंगाल का प्रथम गवर्नर बना।
- 1764 ई. के बक्सर युद्ध के पश्चात हुई इलाहाबाद संधि ने कम्पनी को भारत में पूर्णतः राजनीतिक शक्ति प्रदान की।
- वारेन हेस्टिंग्स 1772 ई. में बंगाल के प्रथम गवर्नर जनरल बने।
- वारेन हेस्टिंग्स ने सुरक्षा घेरे की नीति (पॉलिसी ऑफ रिंग फेंस) को अपनाया जिसके अनुसार कम्पनी द्वारा अपने अधिकृत प्रदेशों को शत्रुओं से सुरक्षा के लिए पड़ौसी राज्यों के साथ मैत्री संधि कर उन्हें बफर राज्यों के रूप में प्रयुक्त किया जाता था।
- लॉर्ड कार्नवालिस ने भारतीय शासकों के मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई ।
- 1798 ई. में लॉर्ड वेलेजली ने देशी राज्यों के साथ सहायक संधि की नीति अपनाई।
- इस नीति के तहत देशी राज्यों की आंतरिक सुरक्षा व विदेशी नीति का उत्तरदायित्व अंग्रेजों पर था जिसका खर्च संबंधित राज्य को उठाना पड़ता था।
- कम्पनी इस हेतु उस राज्य में एक अंग्रेज रेजीडेन्ट की नियुक्ति करती थी एवं सुरक्षा हेतु उस देशी राज्य के खर्च पर अपनी सेना रखती थी।
- भारत में प्रथम सहायक संधि 1798 ई. में हैदराबाद के निजाम के साथ की गई।
- अगस्त 1803 ई. में आंग्ल-मराठा के द्वितीय युद्ध में मराठों की पराजय के पश्चात मराठा पेशवा दौलतराव द्वारा 30 दिसम्बर, 1803 को अंग्रेजों के साथ सुर्जीअर्जन गाँव संधि कर जयपुर एवं जोधपुर राज्यों को अंग्रेजों को सौंप दिया।
- राजस्थान में सर्वप्रथम भरतपुर राज्य के महाराजा रणजीतसिंह के साथ 29 सितम्बर 1803 को लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि की।
- आपसी अविश्वास के कारण यह संधि क्रियान्वित न हो पायी। इससे रुष्ट होकर लॉर्ड लेक के नेतृत्व में अंग्रेजों ने 5 बार भयंकर आक्रमण किये लेकिन अंग्रेज भरतपुर को जीतने में असफल रहे एवं अप्रैल 1805 में नई संधि हुई जिसमें भरतपुर की पूर्व की स्थिति रखी गई, भरतपुर राज्य की सीमा एवं क्षेत्रफल में कोई परिवर्तन नहीं किया गया तथा भरतपुर को डीग क्षेत्र लौटा दिया गया।
- अलवर प्रथम राज्य था जिसने ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ विस्तृत रक्षात्मक एवं आक्रामक संधि की थी।
- अंग्रेजों द्वारा जयपुर के महाराजा जगतसिंह द्वितीय के साथ 12 दिसम्बर, 1803 को संधि की गई।
- 1805 ई. में यह संधि भंग कर दी गई लेकिन मराठा सरदार एवं पिंडारियों के आतंक ने जयपुर-अंग्रेजों को पुनः संधि करने के लिए बाध्य कर दिया।
- 2 अप्रैल, 1818 को ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं जयपुर राज्य के मध्य पुनः संधि हुई।
- जोधपुर शासक भीमसिंह के समय जोधपुर राज्य के साथ 22 दिसम्बर, 1803 को संधि की गई। इस संधि की प्रमुख शर्तें एक-दूसरे को सहायता देने, परस्पर मित्रता बनाए रखने की थी ।
- खिराज नहीं देने एवं जोधपुर राज्य में किसी फ्रांसीसी को नौकरी नहीं देने अथवा देने से पूर्व कम्पनी से सलाह मशविरा करना आदि थी।
- 1813 ई. में लॉर्ड हेस्टिंग्स के गवर्नर जनरल बनने के बाद कम्पनी सरकार की नीति में परिवर्तन आया।
- लॉर्ड हेस्टिंग्स ने घेरे की नीति के स्थान पर अधीनस्थ पार्थक्य की नीति को क्रियान्वित किया।

1817-18 की अधीनस्थ संधि

- 1818 ई. में राजपूत राज्यों के साथ संधियाँ करने के लिए लॉर्ड हेस्टिंग्स ने दिल्ली रेजीडेन्ट चार्ल्स मेटकॉफ को कार्य सौंपा। मेटकॉफ ने राज्य के प्रतिनिधियों से बातचीत कर संधि पत्र तैयार किये।
- सन् 1811 में चार्ल्स मेटकॉफ ने राजस्थान के राजपूत शासकों का एक परिसंघ बनाने का सुझाव दिया जो ब्रिटिश संरक्षण में कार्य करे।
- राजस्थान में अधीनस्थ पार्थक्य की नीति (1818 की संधि) को स्वीकार करने वाली पहली रियासत - करौली।
- (9 नवम्बर 1817) अधीनस्थ पार्थक्य संधि स्वीकार करने के समय करौली का शासक- हरबक्षपाल सिंह थे।
- अधीनस्थ पार्थक्य की संधि को स्वीकार करने वाला अंतिम राज्य- सिरोही (11 सितम्बर 1823) यहाँ के शासक महाराजा शिव सिंह थे।

अधीनस्थ पार्थक्य संधि (1818) की शर्तें

1. अंग्रेजी कम्पनी एवं संधिकर्त्ता राज्य के साथ सदैव मित्रता के समन्ध बने रहेंगे। एक के मित्र तथा शत्रु दोनों के मित्र और शत्रु समझे जाएँगे।
2. संधिकर्त्ता राज्य की रक्षा करने का दायित्व कम्पनी का होगा।
3. संधिकर्त्ता राज्य कम्पनी का आधिपत्य स्वीकार करेगा और कम्पनी सरकार के अधीन रहते हुए सदैव सहयोग प्रदान करेंगे।
4. ये राज्य अन्य किसी राज्य के साथ राजनीतिक सम्बन्ध नहीं रखेंगे और न ही किसी के साथ संधि व युद्ध करेंगे। यदि किसी पड़ौसी राज्य के साथ झगड़ा हो जाएगा, तो वे उसमें कम्पनी की मध्यस्थता स्वीकार करेंगे।
5. संधिकर्ता राज्यों के शासक व उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के स्वतंत्र शासक होंगे।
6. कम्पनी इन राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
7. जो राज्य पहले मराठों को खिराज देते थे, वे ही अब कम्पनी को खिराज देंगे।

कोटा राज्य के साथ संधि

26 दिसम्बर, 1817 को कोटा के मुख्य प्रशासक झाला जालिमसिंह एवं गवर्नर जनरत के विशेष प्रतिनिधि चार्ल्स मेटकॉफ के मध्य 1818 की संधि की गई। इस संधि में 11 धाराएँ थीं।

11वीं धारा में संधि पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों के नाम हैं।

संधि की शर्तें

1. कम्पनी सरकार व कोटा राज्य के मध्य पारस्परिक मित्रता एवं सद्भावना सदैव बनी रहेगी।
2. एक पक्ष का मित्र एवं शत्रु दूसरे पक्ष का भी मित्र एवं शत्रु होगा।
3. कम्पनी सरकार कोटा राज्य को सैनिक प्रदान करेगी एवं आवश्यकता पड़ने पर कोटा राज्य द्वारा कम्पनी सरकार को सैनिक सहायता प्रदान करेगा।
4. कोटा राज्य कम्पनी सरकार की अनुमति के बिना किसी अन्य शक्ति से युद्ध एवं मैत्री संधि नहीं करेगा।
5. कोटा महाराव एवं उसके उत्तराधिकारी किसी अन्य शक्ति से विवाद होने पर अंग्रेजों को मध्यस्थ बनाएंगे।
6. कोटा राज्य मराठों को जो खिराज देता था, वह अब कम्पनी सरकार को देगा।
7. कोटा के महाराव एवं उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के शासक बने रहेंगे। कम्पनी उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
8. कोटा महाराव और उसके उत्तराधिकारी सदैव अंग्रेज सरकार की अधीनता में रहते हुए उसे सहयोग देते रहेंगे।

20 फरवरी, 1818 को झाला जालिमसिंह द्वारा अंग्रेजों से पूरक संधि कर दो नयी शर्तें जोड़ी गई।

राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह

- कर्नल जेम्स टॉड पहला व्यक्ति था जिसने राजस्थान का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित इतिहास लिखा इसीलिए कर्नल जेम्स टॉड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा जाता है।
- इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की गलतियों को दूर किया इसीलिए गौरीशंकर हीराचंद ओझा को राजस्थान के इतिहास का वैज्ञानिक पिता कहा जाता है।
- घोड़े वाले बाबा उपनाम से इतिहास में प्रसिद्ध कर्नल जेम्स टॉड के गुरु ज्ञानचंद थे। कर्नल जेम्स टॉड ने पृथ्वीराज रासो के लगभग 30000 हजार दोहो, का अंग्रेजी में अनुवाद किया था।

- ब्रिटिश सरकार ने कर्नल जेम्स टॉड को 1818 से 1822 के मध्य पश्चिमी राजपूत राज्यों का पॉलिटिकल एजेंट नियुक्त किया जिसमें 6 रियासतें शामिल थी
- 1-कोटा 2- बूँदी 3-जोधपुर 4-उदयपुर 5-सिरोही 6-जैसलमेर
- 1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत (Different views in reference to the revolt of 1857)
  - डॉ. रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था ।
  - डॉ. रामविलास शर्मा– यह जनक्रांति थी ।
  - डिजरायली बेंजामिन डिजरैली – यह राष्ट्रीय विद्रोह था ।
  - वी. डी. सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस) ।
  - एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था ।
  - सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रैविलियन, सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंदोपाध्याय सैयद अहमद खाँ भी सहमत हैं ।)
  - जवाहरलाल नेहरु - यह विद्रोह मुख्यतः सामन्तशाही विद्रोह था ।
  - सर जेम्स आउट्रम और डब्लयू टेलर ने इसको - यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था कहा है ।
  - क्रांति के प्रमुख कारण (Reason of 1857 Revolution)
  - देशी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
  - लॉर्ड डलहौजी की राज्य विलय की नीतियाँ ।
  - चर्बी लगे कारतुस का प्रयोग (एनफील्ड) ।
  - 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किन्तु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी ।
  - 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस माने जाते हैं, जिनका प्रयोग एनफील्ड राइफल में किया जाता था । इस रायफल के बारे में भारतीय सैनिकों में अफवाह फैली की इनमें लगने वाले कारतूसों में गाय तथा सूअर की चर्बी लगी होती है ।
  - कारतूस का प्रयोग करने से पूर्व उसके खोल को मुंह से उतरना पड़ता था जिससे हिंदू तथा मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट होता है । परिणाम स्वरूप 1857 का विद्रोह प्रारंभ हुआ ।
  - 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रांत के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसका मुख्यालय आगरा में था इस प्रांत का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलविन था ।
  - अजमेर- मेरवाड़ा का प्रशासन कर्नल डिक्सन के हाथों में था क्रांति के समय राजपुताना का ए.जी.जी जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस था जिस का मुख्यालय माउंट आबू में स्थित था अजमेर राजपूताना की प्रशासनिक राजधानी था और अजमेर में ही अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार स्थित था ।
  - अजमेर की रक्षा की जिम्मेदारी 15वीं नेटिव इन्फैंट्री बटालियन के स्थान पर ब्यावर से बुलाई गई, लेफ्टिनेंट कारनेल के नेतृत्व वाली रेजिमेंट को दे दी गई मेरठ विद्रोह की खबर 19 मई 1857 को माउंट आबू पहुंची ।

  इस क्रांति का प्रतीक चिह्न रोटी और कमल का फूल था

राजस्थान में क्रांति के समय पॉलिटिकल एजेंट (Rajasthan Political agent in evolution)

1. कोटा रियासत में - मेजर बर्टन
2. जोधपुर रियासत में - मेक मैंसन
3. भरतपुर रियासत में - मोरिशन
4. जयपुर रियासत में – कर्नल ईडन
5. उदयपुर रियासत में - शावर्स और
6. सिरोही रियासत में - जे.डी.हॉल थे

राजस्थान में क्रांति के समय राजपूत शासक (Rajasthan Rajput ruler in revolution)–

- कोटा रियासत में - रामसिंह
- जोधपुर रियासत में - तख्तसिंह
- भरतपुर रियासत में - जसवंत सिंह
- उदयपुर रियासत में - स्वरूप सिंह
- जयपुर रियासत में - रामसिंह द्वितीय
- सिरोही रियासत में - शिव सिंह
- धौलपुर रियासत में - भगवंत सिंह
- बीकानेर रियासत में - सरदार सिंह
- करौली रियासत में - मदनपाल
- टोंक रियासत में - नवाब वजीरुद्दौला
- बूँदी रियासत में - रामसिंह

8. संयुक्त राजस्थान को वृहद् राजस्थान कब बनाया गया?
   (a) 30 मार्च, 1949
   (b) 18 अप्रैल, 1948
   (c) 15 मई, 1949
   (d) 1 नवम्बर, 1956

उत्तर :- a

9. राजस्थान के एकीकरण का श्रेय किसे दिया जाता है?
   (a) हीरालाल शास्त्री को
   (b) वल्लभ भाई पटेल को
   (c) जयनारायण व्यास को
   (d) विजय सिंह पथिक को

उत्तर :- B

10. लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व वाले रियासती विभाग का सचिव किसे बनाया गया?
   (a) माणिक्यलाल वर्मा
   (b) एन. बी. गाडगिल
   (c) वी. पी. मेनन
   (d) पी. सत्यनारायण राव

उत्तर :- c

अध्याय – 8

किसान और आदिवासी आंदोलन

राजस्थान में आजादी से पूर्व कई किसान एवं आदिवासी आंदोलन हुए जो उन पर किये जा रहे अत्याचारों के विरोध में हुए । राजस्थान में कई रियासतें किसानों से मनमाना कर "लाग" वसूलती थी । इनके विरोध में समय-समय पर किसान नेताओं ने राजस्थान में किसान आंदोलन किये । इसी तरह आदिवासियों के ऊपर हुए अत्याचारों के विरोध में भी कई आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व आदिवासी नेताओं ने किया जो राजस्थान में आदिवासी आंदोलन या किसान आंदोलन के रूप में जाने गए ।

बिजौलिया किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था । बिजौलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लम्बा चलने वाला अहिंसक किसान आंदोलन था, जोकि करीब 55 साल तक चला ।

बिजौलिया किसान आंदोलन (1897-1941 55 वर्षों तक) -

जिला भीलवाड़ा
बिजौलिया का प्राचीन नाम विजयावल्ली था ।
संस्थापक अशोक परमार
बिजौलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।
कारण
1. लगान की दरें अधिक थीं ।
2. लाग-बाग कई तरह के थे।
3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।
बिजौलिया किसानों से 84 प्रकार का लाग-बाग (टेक्स) वसुल किया जा जाता था।
बिजौलिया के किसान लोगों में धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।
बिजौलिया किसान आंदोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।
1. 1897 से 1916 नेतृत्व - साधु सीताराम दास
2. 1916 से 1923 नेतृत्व - विजयसिंह पथिक
3. 1923 से 1941 नेतृत्व – माणिक्य लाल वर्मा, हरिभाऊ उपाध्याय जमनालाल बजाज, रामनारायण चौधरी

प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से

- 1897 में बिजौलिया के किसान गंगाराम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपूरा गांव से एकत्रित होते और ठिकानेदार की शिकायत मेवाड़ के महाराणा से करने का निश्चिय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहां मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेदार रावकृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।
- चंवरी कर एक विवाह कर था, इसकी दर 5 रूपये थी। 1906 में कृष्णसिंह मर गया और नये ठिकानेदार राव पृथ्वीसिंह बने जिन्होंने तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया)।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)

- 1917 में विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल पंचबोर्ड (ऊपरमाल पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया। बिजौलिया किसान आंदोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमाल डंका थे।
- 1919 में बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजौलिया किसान आंदोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान की दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने की सिफारिश की किन्तु मेवाड़ के महाराणा ने इसकी कोई भी सिफारिश स्वीकार नहीं की।
- 1922 में राजपुताना का ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजौलिया आते हैं और किसानों और ठिकानेदार के मध्य समझौता करवाते हैं यह समझौता स्थाई सिद्ध नहीं हुआ।
- 1923 में विजय सिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया जाता है और 6 वर्ष की सजा सुना दी जाती है।

तृतीय चरण (1923 से 1941)

- 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य थे इन्होंने अपने राजस्व मंत्री डॉ. मोहन सिंह मेहता को बिजौलिया भेजा इसने ठिकानेदार व किसानों के मध्य समझौता किया लगान की दरें कम कर दी अनेक लाग-बाग हटा दिये और बेगार प्रथा को समाप्त कर दिया।
- यह किसान आंदोलन सफलता पूर्वक समाप्त होता है।
- इस किसान आंदोलन में दो महिलाओं रानी भीलनी व उदी मालन ने भाग लिया था।
- किसान आंदोलन के समय माणिक्यलाल वर्मा ने पंछीड़ा गीत लिखा था।

बेंगू (चित्तौड़गढ़) किसान आंदोलन

- बेंगू (चित्तौड़गढ़) मेवाड़ राज्य का ठिकाना था।
- बेंगू के किसानों ने अपने यहाँ लाग-बाग, बेगार और ऊँचे लगान के विरुद्ध 1921 ई. में मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान पर आंदोलन शुरू किया।
- इसका नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया।
- 1922 में मंडावरी में किसान आंदोलन को गोलियों की बौछार से तितर-बितर किया गया। यहाँ सिपाहियों की गोलियों का शिकार खुद एक सिपाही फेज खाँ हुआ।
- किसानों के विरोध के आगे ठाकुर अनूप सिंह को झुकना पड़ा और राजस्थान सेवा संघ और अनूप सिंह के बीच समझौता हो गया।
- मेवाड़ सरकार ने इस समझौते को बोल्शेविक संधि कहकर अनूपसिंह को उदयपुर में नजरबंद कर दिया।
- 13 जुलाई, 1923 को गोविन्दपुरा में किसान सम्मेलन पर सरकार ने गोलियां चलवायी जिसमें रूपाजी व कृपाजी नामक किसान मारे गये।
- बेंगू में किसानों की शिकायतों की जाँच हेतु सरकार ने बंदोबस्त आयुक्त श्री ट्रेन्च की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया।
- सेटलमेन्ट कमिश्नर टेन्च की दमनकारी कार्यवाही से विजयसिंह पथिक पकड़े गये तथा उन्हें 3.5 वर्ष कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

बूँदी का किसान आंदोलन

राजस्थान में भूमि बंदोबस्त व्यवस्था के बावजूद भी गावों में धीरे-धीरे महाजनों का वर्चस्व बढ़ने लगा। 'साद' प्रथा के अंतर्गत प्रत्येक क्षेत्र में महाजन से लगान की अदायगी का आश्वासन लिया जाने लगा। इस व्यवस्था से किसान अधिकाधिक रूप से महाजनों पर आश्रित होने लगे तथा उनके चंगुल में फंसने लगे। 19 वीं सदी के अंत में व 20 वीं सदी के शुरू में जागीरदारों द्वारा किसानों पर नए-नए कर लगाये जाने लगे और उनसे बड़ी धनराशि एकत्रित की जाने लगी। जागीरदारी व्यवस्था शोषणात्मक हो गई। किसानों से अनेक करों के

अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के लाग-बाग लेने की प्रथा भी प्रारंभ हो गई। ये लागें दो प्रकार की थी।

1. स्थाई लाग

2. अस्थाई लाग (इन्हें कभी-कभी लिया जाता था।)

इस कारण से जागीर क्षेत्र में किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई जिसके कारण किसानों में रोष उत्पन्न हुआ तथा वे आंदोलन करने को उतारू हो गए।

- बिजौलिया, बेंगू और अन्य क्षेत्र के किसानों के समान ही बूँदी राज्य के किसानों को भी अनेक प्रकार की लागतों (लगभग 25%), बेगार एवं ऊँची दरों पर लगान की रकम देनी पड़ रही थी।
- बूँदी राज्य में वसूले जा रहे कई करों के अलावा । रुपये पर । आने की दर से स्थाई रूप से युद्धकोष के लिए धनराशि ली जाने लगी। किसानों के लिए यह अतिरिक्त भार असहनीय था । किसान राजकीय अत्याचारों से परेशान होने लगे।
- मेवाड़ राज्य के बिजौलिया में किसान आंदोलन की कहानियां पूरे राजस्थान में व्याप्त हुई । अप्रैल 1922 में बिजौलिया की सीमा से जुड़े बूँदी राज्य के 'बराड़' क्षेत्र के पीड़ित किसानों ने आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। इसीलिए इस आंदोलन को बरड़ किसान आंदोलन भी कहते हैं । किसानों को राजस्थान सेवा संघ का मार्गदर्शन प्राप्त था।
- किसानों ने राज्य की सरकार को अनियमित लाग, बेगार व भेंट आदि देना बंद कर दिया। आंदोलन का नेतृत्व 'राजस्थान सेवा संघ' के कर्मठ कार्यकर्ता 'नयनू राम शर्मा कर रहे थे। इनके नेतृत्व में डाबी नामक स्थान पर किसानों का एक सम्मेलन बुलाया।
- राज्य की ओर से बातचीत द्वारा किसानों की समस्याओं एवं शिकायतों को दूर करने के लिए कई प्रयास हुए, किन्तु वे विफल हो गए। तब राज्य की सरकार ने दमनात्मक नीति अपनाना शुरू किया और निहत्थे किसानों पर निर्ममतापूर्वक लाठियां व गोलियां बरसाई गई ।
- सत्याग्रह करने वाली स्त्रियों पर घुड़सवारों द्वारा घोड़े दौड़ाकर एवं भाले चलाकर अमानवीय अत्याचार किया गया। पुलिस द्वारा किसानों पर की गई। गोलीबारी में झण्डा गीत गाते हुए 'नानकजी भील' शहीद हो गए ।
- आंदोलनकारियों के नेता नयनू राम शर्मा, नारायण लाल, भंवरलाल आदि एवं राजस्थान सेवा संघ के अनेक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर मुकदमे चलाए गए। नयनू राम शर्मा को राजद्रोह के अपराध में 4 वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी ।
- यद्यपि यह आंदोलन असफल रहा किन्तु इस आंदोलन से यहाँ के किसानों को कुछ रियायतें अवश्य प्राप्त हुई और भ्रष्ट अधिकारियों को दण्डित किया गया तथा राज्य के प्रशासन में सुधारों का सूत्रपात हुआ।
- बूँदी का किसान आंदोलन राज्य प्रशासन के विरुद्ध था, जबकि मेवाड़ राज्य के बिजौलिया के आंदोलन में किसानों ने अधिकांशतः जागीर व्यवस्था का विरोध किया था । बूँदी के किसान आंदोलन की विशेषता यह थी कि इसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

<u>नीमूचाणा किसान आंदोलन 1923-24</u>

- नीमूचाणा किसान आंदोलन - अलवर किसान आंदोलन 14 मई 1925 को गठित नीमूचाणा हत्याकाण्ड के लिए प्रसिद्ध है ।
- 31 मई 1925 को नीमूचाणा हत्याकाण्ड तरुण राजस्थान समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ ।
- नीमूचाणा हत्याकाण्ड को महात्मा गांधी ने दोहरी डायरशाही और जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड से भी अधिक बुरा बताया था ।
- अलवर में 80 प्रतिशत भूमि खालसा के अंतर्गत थी जबकि केवल 20 प्रतिशत भूमि जागीरदारों के नियंत्रण में थी ।
- अलवर में अधिकांश किसानों को खालसा क्षेत्रों में स्थायी भू-राजस्व के अधिकार प्राप्त थे, जिन्हें 'बिश्वेदारों' के नाम से जाना जाता था । अलवर में भू-राजस्व की सबसे गलत पद्धति इजारा पद्धति लागू थी, जिसके तहत् ऊँची बोली बोलने वाले को निश्चित भूमि निश्चित अवधि के लिए दे दी जाती थी ।
- 1876 ई. में ब्रिटिश पद्धति पर अलवर में पहला भूमि बंदोबस्त किया गया ।
- नीमूचाणा किसान आंदोलन अलवर में हुआ नीमूचाणा गांव वर्तमान में अलवर जिले की बानसूर तहसील में है ।
- 1923 ई. में अलवर के शासक जयसिंह के द्वारा किसानों पर लाग/कर लगाए जाने के कारण इस आंदोलन की शुरुआत हुई ।

राजस्थान की कला व संस्कृति

अध्याय - I

लोक देवता और लोक देवियाँ

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता और देवियाँ निम्नलिखित हैं –

राजस्थान के लोक देवता

"नोट- राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में चबूतरेनूमा बने हुए लोकदेवताओं के पूजा स्थल 'देवरे' कहलाते हैं तो अलौकिक शक्ति द्वारा किसी कार्य को करना अथवा करवा देना "पर्चा देना" कहलाता है।"

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता निम्नलिखित हैं -

मारवाड़ के पंच पीर - (1) गोगाजी (2) पाबूजी (3) हड़बूजी (4) रामदेव जी (5) मेहा जी।

पाबू, हड़बू, रामदे, मांगलिया मेहा।
पाँचों पीर पधारजो गोगाजी गेहा।।

(1) गोगाजी चौहान

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता गोगाजी राठौर का वर्णन-

पंच पीरों में सर्वाधिक प्रमुख स्थान।

जन्म - संवत् 1003 में, जन्म स्थान - ददरेवा (चूरू)।

पिता - जेवरजी चौहान, माता - बाछल दे, पत्नी - कोलुमण्ड (फलौदी, जोधपुर) की राजकुमारी केलमदे (मेनलदे)।

- केलमदे की मृत्यु साँप के कांटने से हुईजिससे क्रोधित होकर गोगाजी ने अग्नि अनुष्ठान किया। जिसमें कई साँप जलकर भस्म हो गये फिर साँपों के मुखिया ने आकर उनके अनुष्ठान को रोककर केलमदे को जीवित करते हैं। तभी से गोगाजी नागों के देवता के रूप में पूजे जाते हैं।
- गोगाजी का अपने मौसेरे भाई.यों अर्जन व सुर्जन के साथ जमीन जायदाद को लेकर झगड़ा था। अर्जन - सुर्जन ने मुस्लिम आक्रान्ताओं (महमूद गजनवी) की मदद से गोगाजी पर आक्रमण कर दिया। गोगाजी वीरतापूर्वक लड़कर शहीद हुए।
- युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा (चूरू) में गिरा इसलिए इसे शीर्षमेडी (शीषमेडी) तथा धड़ नोहर (हनुमानगढ़) में गिरा इसलिए इसे धड़मेड़ी/धुरमेड़ी/गोगामेड़ी भी कहते हैं।
- बिना सिर के ही गोगाजी को युद्ध करते हुए देखकर महमूद गजनवी ने गोगाजी को जाहिर पीर (प्रत्यक्ष पीर) कहा।
- उत्तर प्रदेश में गोगाजी को जहर उतारने के कारण जहर पीर/जाहर पीर भी कहते हैं।
- गोगामेड़ी का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने करवाया। गोगामेड़ी के मुख्य द्वार पर बिस्मिल्लाह लिखा है तथा इसकी आकृति मकबरेनुमा है। गोगामेड़ी का वर्तमान स्वरूप बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की देन हैं। प्रतिवर्ष गोगानवमी (भाद्रपद कृष्णा नवमी) को गोगाजी की याद में गोगामेड़ी, हनुमानगढ़ में भव्य मेला भरता है।
- गोगाजी की आराधना में श्रद्धालु सांकल नृत्य करते हैं।
- गोगामेड़ी में एक हिन्दू व एक मुस्लिम पुजारी हैं।
- प्रतीक चिह्न - सर्प।
- खेजड़ी के वृक्ष के नीचे गोगाजी का निवास स्थान माना जाता है।
- गोगाजी की ध्वजा सबसे बड़ी ध्वजा मानी जाती है।
- 'गोगाजी की ओल्डी' नाम से प्रसिद्ध गोगाजी का अन्य पूजा स्थल - साँचौर (जालौर)।
- गोगाजी से सम्बन्धित वाद्य यंत्र - डेरू।
- किसान वर्षा के बाद खेत जोतने से पहले हल व बैल को गोगाजी के नाम की राखी गोगा राखड़ी बांधते हैं।
- सवारी - नीली घोड़ी।
- गोगा बाप्पा नाम से भी प्रसिद्ध हैं।

(2) पाबूजी राठौड़ -

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता पाबूजी राठौर का वर्णन-

जन्म - 1239 ई.में, जन्म स्थान - कोलुमण्ड गाँव (फलौदी, जोधपुर)।

पिता - धाँधल जी राठौड़, माता - कमलादे, पत्नी - फूलमदेध्सुपियार दे सोढ़ी।

- फूलमदे अमरकोट के राजा सूरजमल सोढ़ा की पुत्री थी।
- पाबूजी की घोड़ी- केसर कालमी (यह काले रंग की घोड़ी उन्हें देवल चारणी ने दी, जो जायल, नागौर के काछेला चारण की पत्नी थी)।
- सन् 1276 ई.में जोधपुर के देचू गाँव में देवलचारणी की गायों को जींदराव खींची से छुड़ाते हुए पाबूजी वीर गति को प्राप्त हुए, पाबूजी की पत्नी

उनके वस्त्रों के साथ सती हुई। इस युद्ध में पाबूजी के भाई बूड़ोजी भी शहीद हुए।

- पाबूजी के भतीजे व बूड़ोजी के पुत्र रूपनाथ जी ने जींदराव खींची को मारकर अपने पिता व चाचा की मृत्यु का बदला लिया। रूपनाथ जी को भी लोकदेवता के रूप में पूजते हैं। राजस्थान में रूपनाथ जी के प्रमुख मंदिर कोलुमण्ड (फलौदी, जोधपुर) तथा सिम्भूदड़ा (जोखा मण्डी, बीकानेर) में है। हिमाचल प्रदेश में रूपनाथ जी को बालकनाथ नाम से भी जाना जाता है।
- पाबूजी की फड़ नायक जाति के भील भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- फड़/पड़ - किसी भी महत्पूर्ण घटना या महापुरुष की जीवनी का कपड़े पर चित्रात्मक अंकन ही फड़/पड़ कहलाता है। फड़ का वाचन केवल रात्रि में होता है। फड़-वाचन के समय भोपा वाद्य यंत्र के साथ फड़ बाँचता है तथा भोपी संबंधित प्रसंग वाले चित्र को लालटेन की सहायता से दर्शकों को दिखाती है तथा साथ में नृत्य भी करती रहती है।
- राजस्थान में फड़ निर्माण का प्रमुख केन्द्र शाहपुरा (भीलवाड़ा) है। वहाँ का जोशी परिवार फड़ चित्रकारी में सिद्धहस्त है। शांतिलाल जोशी व श्रीलाल जोशी प्रसिद्ध फड़ चित्रकार हुए हैं। यह जोशी परिवार वर्तमान में 'द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका' तथा 'कलिंग विजय के बाद अशोक' विशय पर फड़ बना रहा है।
- सर्वाधिक फड़ें तथा सर्वाधिक लोकप्रिय/प्रसिद्ध फड़ पाबूजी की फड़ है।
- रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- सबसे प्राचीन फड़, सबसे लम्बी फड़ तथा सर्वाधिक प्रसंगों वाली फड़ देवनारायण जी की फड़ है।
- भारत सरकार ने राजस्थान की जिस फड़ पर सर्वप्रथम डाक टिकट जारी किया वह देवनारायण जी की फड़ (2 सितम्बर, 1992 को 5 रु. का डाक टिकट) है।
- देवनारायण जी की फड़ गुर्जर जाति के कुँआरे भोपे जंतर वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- भैंसासुर की फड़ का वाचन नहीं होता, इसकी केवल पूजा (कंजर जाति के द्वारा) होती है।
- रामदला-कृष्णदला की फड़ (पूर्वी राजस्थान में) एकमात्र ऐसी फड़ है जिसका वाचन दिन में होता है।
- शाहपुरा के जोशी परिवार द्वारा बनाई गई अमिताभ बच्चन की फड़ को बाँचकर मारवाड़ का भोपा रामलाल व भोपी पताशी प्रसिद्ध हुए।
- मारवाड़ में साण्डे (ऊँटनी) लाने का श्रेय पाबूजी को जाता है।
- पाबूजी 'ऊँटों के देवता', 'गौरक्षक देवता' तथा 'प्लेग रक्षक देवता' के रूप में प्रसिद्ध है।
- पाबूजी को 'लक्ष्मण का अवतार' माना जाता है।
- ऊंटों की पालक जाति राईका/रेबारी/देवासी के आराध्य देव पाबूजी हैं।
- पाबूजी की जीवनी 'पाबू प्रकाश' के रचयिता- आशिया मोड़जी।
- हरमल व चाँदा डेमा पाबूजी के रक्षक थे।
- माघ शुक्ला दशमी तथा भाद्रपद शुक्ला दशमी को कोलुमण्ड गाँव (फलौदी, जोधपुर) में पाबूजी का प्रसिद्ध मेला भरता है।
- पाबूजी के पवाड़ेध्पावड़े (गाथा गीत) प्रसिद्ध है, जो माठ वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं।
- प्रतीक चिह्न - भाला लिए हुए अश्वारोही तथा बायीं ओर झुकी हुईपाग।

(3) हड़बूजी -

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता हड़बूजी का वर्णन-

- मारवाड़ के पंचपीरों में से एक हड़बूजी के पिता का नाम-मेहाजी सांखला (भुंडेल, नागौर)।
- हड़बूजी बाबा रामदेवजी के मौसेरे भाई. थे।
- गुरु - बालीनाथ।
- संकटकाल में हड़बूजी ने जोधपुर के राजा राव जोधा को तलवार भेंट की और राव जोधा ने इन्हें बैंगटी (फलौदी, जोधपुर) की जागीर प्रदान की।
- बैंगटी में इनका प्रमुख पूजा स्थल है। यहाँ हड़बूजी की गाड़ी (छकड़ाध्ऊँट गाड़ी) की पूजा होती है। इस गाड़ी में हड़बूजी विकलांग गायों के लिए दूर-दूर से घास भरकर लाते थे।
- हड़बूजी शकुन शास्त्र के ज्ञाता थे।
- हड़बूजी की सवारी सियार मानी जाती है।

(4) रामदेवजी -

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता रामदेवजी का वर्णन-

- रामसापीर, रूणेचा रा धणी व पीरां रा पीर नाम से प्रसिद्ध।
- रामदेव जी को कृष्ण का तथा उनके बड़े भाई. बीरमदेव को बलराम का अवतार माना जाता है।

- इन्हें प्रसन्न करने के लिए "भैंस की कुर्बानी" दी जाती हैं। इनका प्रमुख मन्दिर स्थालोदड़ा (सीकर) में स्थित हैं। जहाँ प्रतिवर्ष रामनवमी को मेला भरता हैं।

• लोक देवियाँ

राजस्थान की लोक देवियाँ

करणी माता

- बीकानेर के राठौड़ शासकों की कुलदेवी। 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात। जन्म सुआप गाँव के चारण परिवार में।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।

करणी जी के काबे

- इनके मंदिर के चूहे। यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते हैं।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल
- राव कान्ह ने इनकी गायों पर हमला किया।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मन्दिर में चांदी के किवाड़ भेंट किया।
- इनके बचपन का नाम रिद्धुबाई. था।
- मठ – देवी के मन्दिर को मठ कहते हैं।
- अवतार - जगतमाता
- उपनाम – काबा वाली माता, चूहों की देवी।
- करणी जी की इष्ट देवी 'तेमड़ाजी' हैं। करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर हैं।करणी देवी का एकरूप 'सफेदचील' भी हैं।
- 'नेहड़ी' नामक दर्शनीय स्थल हैं जो करणी माता के मंदिर से कुछ दूर स्थित हैं।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।
- करणी जी के आशीर्वाद एवं कृपा से ही राठौड़ शासक 'रावबीका' नेबी का ने रमें राठौड़ वंश की स्थापना की थी। चौत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में मेला भरता हैं।

जीण माता -

- चौहान वंश की आराध्य देवी। ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी। मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा हैं। मंदिर का निर्माण रैवासा (सीकर) में पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढाई. प्याला मदिरा पान करती हैं।इसे प्रतिदिन ढाई. प्याला शराब पिलाई. जाती हैं।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चौत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता हैं।
- जीण माता तांत्रिक शक्तिपीठ हैं। इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहतीहैं।
- जीण माता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा हैं।यह गीत कनफटे जोगियों द्वारा डमरू एवं सारंगी वाद्य की संगत में गाया जाता हैं।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी हैं।

कैला देवी -

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी। इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं।
- मंदिर :- त्रिकूट पर्वत की घाटी (करौली) में। यहाँ नवरात्रा में विशाल लक्खी मेला भरता हैं।
- कैलादेवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चौत्र मास की शुक्ला अष्टमी को भरता हैं। कैलादेवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी हैं।

शिला देवी -

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी। इनका मंदिर आमेर दुर्ग में हैं।

अन्नपूर्णा -

- शिलामाता की यह मूर्तिपाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित हैं। महाराजा मानसिंह पं. बंगाल के राजा के दार से सन् 1604 में मूर्ति लाए थे।
- इस देवी को नरबलि दी जाती थी तथा यहाँ भक्तों की मांग के अनुसार मन्दिर का चरणामृत दिया जाता हैं। मान्यता हैं कि इस देवी की जहाँ पूजा होती हैं उसे कोई नहीं जीत सका।

जमुवायमाता-

- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी। इनका मंदिर जमुवारामगढ़, जयपुर में हैं। दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

आई.जी माता -

- सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुलदेवी। इनका मंदिर बिलाड़ा (जोधपुर) में हैं। मंदिर 'दरगाह' व थान 'बड़ेर' कहा जाता हैं। ये रामदेवजी की शिष्या थी।

अध्याय - 8

लोक संगीत और लोक नृत्य

राजस्थान के मध्य युग में वीर रसात्मक सिंधु राग का गायन लोकप्रिय था।

राजस्थान में श्रृंगार रस राग माँड आज भी प्रचलित है जैसे मारवाड़ मेवाड़, जयपुर और जैसलमेर की माँड आदि ।

देशी व विदेशी आक्रमणों के समय जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, मेवाड़, टोंक, अलवर, भरतपुर आदि रियासतों के द्वारा संगीत को आश्रय प्रदान किया गया।

राजस्थान के संगीत प्रिय शासकों में अलवर के महाराजा शिवदान सिंह, टोंक के नवाब इब्राहिम खां आदि प्रमुख थे।

अकबर के शासनकाल में विकसित हुई अष्टछाप संगीत परम्परा के कारण राजस्थान में शास्त्रीय संगीत की ध्रुवपद धमार, पखावज तथा वीणावादन के शैलियों का विकास हुआ जो हवेती संगीत के रूप में विद्यमान है।

वर्तमान राजस्थान के नाथद्वारा जयपुर कोटा कांकरोली भरतपुर जोधपुर के मंदिरों में हवेली संगीत विद्यमान है।

राजस्थान के प्रमुख संगीत घराने

विक्रम संवत की पांचवी शताब्दी में ई.रान के बादशाह बहराम गोर ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया, और यहां से बाहर हजार गायकों को नौकरी के लिए ले गया। गायकों की यह लूट राजस्थान और गुजरात से ही सम्भव है, जहाँ से इतने संगीतज्ञ ले जाये जा सकते थे।" पंडित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (हिस्ट्री ऑफ पर्सिया)

घराना - भारत में भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा को कुछ विशेष परिवारों द्वारा संरक्षित किया जाता रहा है। वर्तमान में यह परम्पराएं अपनी विशेषताओं के कारण घरानों के रूप में जानी जाती है।

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
जयपुर घराना	मनरंग (भूपत खां)	ख्याल गायन शैली का घराना है। मुहम्मद अली खां कोठी वाले इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए हैं।
पटियाला घराना	फ़तेह अली व अली बख्श	यह जयपुर घराने की उपशाखा है।
बीनकार घराना(जयपुर	रज्जब अली बीनकार	रज्जब अली जयपुर के महाराजा रामसिंह के दरबार में प्रसिद्ध बीनकार थे।
मेवाती घराना	उस्ताद घग्घे,नजीर खां	इन्होंने जयपुर की ख्याल गायकी को ही अपनी विशिष्ट शैली में विकसित कर यह घराना प्रारम्भ किया।
डागर घराना	बहराम खां डागर	महाराजा रामसिंह के दरबारी गायक
सेनिया घराना(जयपुर)	तानसेन के पुत्र सूरत सेन	यह सितारियों का घराना है। इस घराने के गायक ध्रुपद की गौहर वाणी व खण्डारवाणी में सिद्धहस्त थे।
रंगीला घराना	रमजान खां 'मियाँ रंगीले	मियाँ रंगीले जोधपुर के गायक इमाम बख्श के शिष्यथे।
जयपुर का कथक घराना	भानूजी	उत्तर भारत के प्रसिद्ध शासीय नृत्य कथक का उद्भव राजस्थान में 13वीं सदी में हुआ माना जाता है।

राजस्थान के प्रमुख संगीत ग्रंथ

संगीत राज

- इसकी रचना मेवाड़ के महाराणा कुम्भा द्वारा 15 वीं सदी में की गई.।
- ये पाँच कोषो पाठ्य, गीत, वाद्य, नृत्य और रस रत्नकोष आदि में विभक्त है। इसे 'उल्लास कहा गया है।
- उल्लास को पुनः परीक्षण में बांटा गया है।

- इसमें ताल, राग, वाद्य, नृत्य, रस, स्वर आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

राग मंजरी

- इसकी रचना पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- ये जयपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी थे।

राग माला

- इस ग्रंथ की रचना भी पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- इसमे राग रागिनी व शुद्ध स्वर-सप्तक का उल्लेख किया गया है।

शृंगार हार

- रणथम्भौर के शासक हम्मीर देव ने इस ग्रंथ की रचना की थी।
- पण्डित भावभट्ट के संगीत ग्रंथ
- ये बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह के दरबारी थे।
- इनके द्वारा रचित ग्रंथों में अनूप संगीत रत्नाकर, अनूप विलास, अनूप राग सागर, अनूप राग माता, 'भाव मंजरी आदि प्रमुख हैं।

राधागोविन्द संगीत सागर

- इसकी रचना जयपुर के महाराजा सवाईप्रतापसिंह ने करवाई.।
- इस ग्रंथ में बिलावल को शुद्ध स्वर सप्तक कहा गया है।

राग-रत्नाकर

- जयपुर के उणीयारा ठिकानें के राव भीमसिंह के दरबार में रहकर राधा कृष्ण ने इस ग्रंथ की रचना की।

राग कल्पद्रुम

- श्री कृष्णानन्द व्यास (मेवाड़ ने इस ग्रंथ की रचना की थी।
- यह ग्रंथ संगीत के साथ-साथ हिन्दी साहित्य के इतिहास के निर्माण के लिये भी उपयोगी माना जाता है।

रागमाला ग्रंथ

- राजस्थान में रचित ये संगीत विशेष ग्रंथ हैं जिनमें रागों के गायन-वादन से निर्मित भावों को कवियों द्वारा शब्दों व चित्रकारों द्वारा चित्रों के रूप में वर्णित किया गया है।
- रागमालाओं में पद्यबद्ध व सचित्र पद्यबद्ध रागमालाएँ प्रमुख हैं।

राजस्थान के प्रमुख संगीतकार

1. सवाईप्रताप सिंह – जयपुर नरेश सवाईप्रताप सिंह संगीत एवं चित्रकला के प्रकांड विद्वान और आश्रयदाता थे। इन्होंने संगीत का विशाल सम्मेलन करवाकर संगीत के प्रसिद्ध ग्रंथ राधा गोविंद संगीत सार की रचना करवाई जिसके लेखन में इनके राजकवि देवर्षि बृजपाल भट्ट का महत्वपूर्ण योगदान रहा इनके दरबार में 22 प्रसिद्ध संगीतज्ञ एवं विद्वानों की मंडली गंधर्व बाईसी थी।
2. महाराजा अनूप सिंह- बीकानेर के शासक जो स्वयं एक विद्या अनुरागी तथा विद्वान संगीतज्ञ थे प्रसिद्ध संगीतज्ञ भाव भट्ट इन्हीं के दरबार में था
3. पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर- यह महाराष्ट्र के थे इन्होंने संगीत पर कई. महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे तथा संगीत को जन-जन तक पहुंचाया।
4. पंडित विष्णु नारायण भातखंडे -प्रसिद्ध संगीत सुधारक एवं प्रचारक इनका जन्म 1830 में हुआ
5. पंडित उदय शंकर- उदयपुर में जन्मे श्री उदय शंकर प्रख्यात कथकली नर्तक रहे हैं।
6. पंडित रविशंकर.- मैहर के बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खां के प्रमुख शिष्य प्रख्यात नृत्यकार पंडित उदय शंकर के अनुज पंडित रविशंकर वर्तमान में विश्व के शीर्षस्थ सितार वादक हैं उन्होनें भारतीय संगीत को विदेशों तक लोकप्रिय बनाया है इन्हें अमेरिका का प्रसिद्ध संगीत पुरस्कार ग्रैमी पुरस्कार मिल चुका है।
7. पंडित विश्व मोहन भट्ट- जयपुर के विश्व प्रसिद्ध सितार वादक जिन्हें 1994 में स्पेनिश गिटार वादक के साथ जुगलबंदी कर कॉम्पैक्ट डिस्क प्रसिद्ध ग्रैमी पुरस्कार मिला उन्होनें एक नई. राग गौरीम्मा का सृजन किया पंडित विश्व मोहन भट्ट ने पश्चिमी गिटार में 14 तार जोड़ कर इसे मोहन वीणा का रूप दिया जो वीणा सरोज एवं सितार का समिश्रण है इनके बड़े भ्राता पंडित शशि मोहन भट्ट भी प्रसिद्ध सितार वादक थे जिनका वर्ष 2001 में जयपुर में निधन हो गया।
8. जहीरुद्दीन फैयाज उद्दीन डागर- प्रसिद्ध ध्रुपद गायक जिन्होंने द्रुपद में जुगलबंदी की परंपरा स्थापित की और ध्रुपद को नया रूप दिया जियाउद्दीन का पद्म भूषण रहीमुद्दीन डागर सभी इसी घराने के हैं :-
9. बन्नो बेगम- जयपुर की प्रसिद्ध गायिका जो जयपुर की प्रसिद्ध गायिका व नर्तकी गौहर जान की पुत्री हैं।
10. अमीर खुसरो- इसका जन्म उत्तर प्रदेश में 1253 ईस्वी में हुआ था खुसरो अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी संगीतज्ञ थे इन्होंने इरानी और भारतीय संगीत शैलियों

8.राजस्थान में आखिरी बार जब राष्ट्रपति शासन किस राज्यपाल के समय लगाया गया था ?

A. जोगिंदरसिंह
B. रघुकुल तिलक
C. एम चेना रेड्डी
D. हुकुमसिंह

उत्तर (C)

9.राजस्थान के राज्यपाल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा कौन सा कथन असत्य है ?

A. वह राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हैं।
B. वह 'राजस्थान रेडक्रास सोसायटी' के अध्यक्ष होते हैं।
C. वह राज्य सैनिक बोर्ड के अध्यक्ष होते हैं।
D. उपर्युक्त सभी

उत्तर (A)

10. राजस्थान के निम्नांकित राज्यपालों में से कौनसे लोकसभा अध्यक्ष भी रहे ?

A. बलिराम भगत
B. प्रतिभा पाटिल
C. रघुकुल तिलक
D. मदनलाल खुराना

उत्तर (A)

अध्याय – 2

मुख्यमंत्री और मंत्रिमंडल की भूमिका और कार्य

- मुख्यमंत्री भारतीय राज्य की कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान होता है।
- वह राज्य विधानसभा का नेता होता है।
- संविधान में मुख्यमंत्री की नियुक्ति और उसके निर्वाचन के लिए कोई विशेष प्रक्रिया नहीं है। बस **अनुच्छेद 163** में लिखा है कि राज्यपाल को सहायता और सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद होगा जिसकी अध्यक्षता मुख्यमंत्री करेंगे।
- मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल के द्वारा संविधान के अनुच्छेद 164 के तहत की जाती है।
- राज्यपाल मुख्यमंत्री की नियुक्ति या तो आमचुनाव के बाद करता है या फिर तब करता है, जब मुख्यमंत्री के त्याग पत्र देने के कारण उसका पद रिक्त हो जाता है।
- मुख्यमंत्री पद के लिए संविधान में कोई योग्यता निर्धारित नहीं की गयी है, लेकिन मुख्यमंत्री के लिए यह आवश्यक है कि वह राज्य विधानसभा का सदस्य हो।
- राज्य विधानसभा का सदस्य न होने वाला व्यक्ति भी मुख्यमंत्री पद पर नियुक्त किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि वह 6 माह के भीतर राज्य विधानसभा का सदस्य निर्वाचित हो जाये।
- 21 सितम्बर, 2001 को उच्चतम न्यायालय के एक निर्णय के अनुसार किसी सजायाफ्ता को मुख्यमंत्री पद के लिए अयोग्य माना जाएगा।

मुख्यमंत्री के दायित्व

- मुख्यमंत्री का पहला कार्य मंत्रिपरिषद का निर्माण करना है।
- वह मंत्रिपरिषद के सदस्यों की संख्या निश्चित करता है और उसके लिए नामों की एक सूची तैयार करता है।
- मुख्यमंत्री राज्यपाल की औपचारिक स्वीकृती से मंत्रियों के बीच विभागों का वितरण करना है।
- मुख्यमंत्री मंत्रियों से पारस्परिक सहयोग पूर्वक कार्य करता है, उनके मतभेद और विवाद का निर्णय करता है।
- उसे भी विभागों के कार्यों की निगरानी और सामंजस्य का व्यापक अधिकार प्राप्त रहता है।

- वह विधानसभा का नेता होता है। अत; विधेयक को पारित कराने, धनराशि की स्वीकृति आदि में उसका व्यापक प्रभाव पड़ता है।
- वह राज्यपाल को विधानसभा को विघटित करने का परामर्श दे सकता है।
- संविधान के अनुसार नियुक्ति के जो अधिकार राज्यपाल को प्राप्त हैं उनका प्रयोग मुख्यमंत्री ही करता है।
- उदाहरण के लिए , राज्य के महाधिवक्ता , राज्य लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष, सदस्यत था राज्य के अन्य मुख्य पदाधिकारियों की नियुक्ति में मुख्यमंत्री का सुझाव होता है।
- मुख्यमंत्री मंत्रिपरिषद की बैठकों का सभापतित्व करता है।
- वह मंत्रिपरिषद और राज्यपाल के बीच संपर्क की कड़ी है। वह मंत्रिपरिषद के निर्णयों एवं अन्य शासन-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण विषयों की सूचना राज्यपाल को देता है।
- राज्य की सर्वोच्च कार्यपालिका शक्ति मुख्यमंत्री के हाथों में है।
- वह राज्य का वास्तविक शासक होता है।

राजस्थान में मुख्यमंत्री

पं. हीरालाल शास्त्री

- 30 मार्च, 1949 को जब 22 देशी रियासतों का विलय कर राजस्थान का निर्माण किया गया तब जयपुर रियासत के पूर्व प्रधान मंत्री पं. हीरालाल शास्त्री को 30 मार्च 1949 को राज्य का प्रधानमंत्री मनोनीत किया गया। उन्होंने राजस्थान के प्रधानमंत्री के तौर पर 5 जनवरी 1951 तक कार्य किया। देश में संविधान के लागू होने के बाद उनके पद का नाम बदल कर मुख्यमंत्री कर दिया गया।

सी.एस. वेंकटाचारी

- हीरालाल शास्त्री को लेकर मतभेद पैदा हो गया और अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से उन्हें पद से हटा दिया गया। उनकी एवज में आई.सी.एस. अधिकारी श्री सी.एस. वेंकटाचारी को मुख्यमंत्री का कार्यभार दे दिया गया। उन्होंने 26 अप्रैल 1951 तक इस पद पर कार्य किया।

जय नारायण व्यास

- जय नारायण व्यास को 26 अप्रैल 1951 को मुख्यमंत्री मनोनीत किया गया। उन्होंने प्रथम आम चुनाव का परिणाम आने तक कार्य किया . 3 मार्च 1952 तक वे पद पर बने रहे. अगस्त 1952 में पहले आम चुनाव का परिणाम आ जाने के बाद वे किशनगढ़ से विधायक बने और 13 नवम्बर 1954 तक इस पद पर बने रहे।

टीकाराम पालीवाल

- टीकाराम पालीवाल प्रदेश के पहले निर्वाचित मुख्यमंत्री बने। इससे पहले के सभी मुख्यमंत्री मनोनीत किये गए थे। 3 मार्च 1952 को राज्य की प्रथम जनतांत्रिक सरकार की बागडोर टीकाराम पालीवाल ने ही संभाली 31 अक्टूबर 1952 तक वे इस पद पर काम करते रहे।

मोहनलाल सुखाड़िया

- सुखाड़िया जी ने कांग्रेस विधायक दल के नेता के चुनाव में जयनारायण व्यास को हराकर सिर्फ 38 साल की उम्र में प्रदेश का मुख्यमंत्री होने का गौरव प्राप्त किया। 13 नवम्बर 1954 को उन्होंने राज्य की कमान संभाली। इस के बाद वे 1957 में दूसरी बार, 1962 में तीसरी बार और 1967 में लगातार चौथी बार मुख्यमंत्री बने । चौथी बार उन्हे अविश्वास प्रस्ताव से पद से हटाने का प्रयास किया गया लेकिन 26 अप्रैल 1967 को उन्होंने अपना बहुमत सिद्ध करने के बाद 8 जुलाई 1971 को पद से इस्तीफा दे दिया।

बरकतुल्लाखां

- बरकतुल्ला खां ने 9 जुलाई 1971 को सुखाड़िया के बाद प्रदेश की कमान संभाली। 16 मार्च 1972 को उन्हें दूसरी बार प्रदेश का मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला। 11 अक्टूबर 1973 को हृदयाघात से उनका निधन हो गया।

हरिदेव जोशी

- बकरतुल्ला खां के निधन के बाद प्रदेश की बागडोर हरिदेव जोशी को सौंपी गई। 11 अक्टूबर, 1973 को उन्होंने राजस्थान के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली / 10 मार्च 1985 को वे दूसरी बार प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। 4 दिसम्बर 1989 को वे तीसरी बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बने ।

जगन्नाथ पहाड़िया

- जून, 1980 में हुए सात वीं विधानसभा के चुनाव में जगन्नाथ पहाड़िया को राजस्थान का मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला। उन्होंने 6 जून, 1980 को शपथ ली। और 13 जुलाई , 1981 तक पद पर बने रहे।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

- दोस्तों, राजस्थान PTI 3rd Grade 2022 (25 सितम्बर) की परीक्षा में हमारे नोट्स में से पेपर - I & 2 में 204 मार्क्स के प्रश्न आये थे , जबकि cutoff मात्र 184.55 प्रश्न पर गयी थी/ (पेपर -I और 2 दोनों हमने youtube पर अलग अलग वीडियो में explain किया है)
- RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे , जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी /

अन्य रिजल्ट -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/nc3moh

Online order – https://bit.ly/pti-2nd-notes